हिन्दी व्याकरण
निबन्ध और पत्र-लेखन

श्री एस० एल० माथुर, एम० ए०, बी० टी०
हैड मास्टर, गवर्नमैन्ट हाई स्कूल, सवाई माधोपुर

र्ग बुक कम्पनी, जयपुर

१९५५ २)

हिन्दी व्याकरण
निबन्ध और पत्र-लेखन

श्री एन० एल० माथुर, एम० ए०, बी० टी०
हैड मास्टर, गवर्नमैन्ट हाई स्कूल, सवाई माधोपुर

गर्ग बुक कम्पनी, जयपुर

१९५४ २)

विषय-सूची

पहला अध्याय	व्यावहारिक व्याकरण	पृष्ठ
१.	भाषा और व्याकरण	३
२.	शब्द और उनके भेद	६
३.	शब्दों में प्रभेद	१७
४.	रिक्त स्थानों की पूर्ति	२४
५.	लिंग, वचन और कारक	३०
६.	क्रिया के वाच्य	३३
७.	विरामादि चिन्हों का प्रयोग	३६
८.	अशुद्धियों का संशोधन	४०
९.	मुहावरे और लोकोक्तियाँ	४७
१०.	संक्षिप्त वाक्य विश्लेषण	५५

दूसरा अध्याय—व्यावहारिक पत्र-रचना

१.	पत्र-रचना सम्बन्धी आवश्यक बातें	६१
२.	व्यक्तिगत पत्र	६७
३.	निमंत्रण-पत्र	७३
४.	व्यावसायिक पत्र	७६
५.	आवेदन पत्र	८३
६.	शिकायती पत्र	८८
७.	विविध पत्र	६७

तीसरा अध्याय—व्यावहारिक निबंध रचना

(क)	निबंध रचना सम्बंधी आवश्यक बातें	१०७
(ख)	कुछ निबंधों की विस्तृत रूप रेखाएँ	११२

विषय	पृष्ठ
१. किसी रेल यात्रा का वर्णन	११२
२. किसी विवाह का वर्णन	११३
३. स्कूल के वार्षिकोत्सव का वर्णन	११४
४. स्वतंत्रता दिवस का वर्णन	११४
५. किसी विशिष्ट स्थान का वर्णन	११५
६. बालचर संस्था का वर्णन	११६
७. आदर्श गृहस्थी का वर्णन	११७
८. रामायण का वर्णन	११८
९. भारतीय किसान का वर्णन	११८
१०. नागरिक के अधिकारों का वर्णन	११६
११. भारत को उन्नतिशील बनाने के साधन	१२०
१२. हिन्दी प्रचार के उपाय	१२१
१३. हिंदू मुस्लिम एकता	१२२
१४. अछूतोद्धार	१२३
१५. अहिंसा का महत्व	१२४
१६. ब्रह्मचर्य का महत्व	१२५
१७. समय का सदुपयोग	१२५
१८. 'जहाँ सुमति तँह सम्पत्ति नाना'	१२६
१९. परोपकार	१२७
२० मित्रता	१२८
(ग) कुछ निबंधों के नमूने	१२६
१. दशहरा	१२६
२. दीपावली	१३३
३. पुष्कर मेला	१३८
४. वर्षा ऋतु	१४३
५. शरद ऋतु	१४८

विषय		पृष्ठ
६.	ताजमहल	१४२
७.	रणथंभोर का किला	१४६
८.	शिमला की सैर	१६०
६.	राजस्थान का एक गुप्त रमणीक स्थान	१६५
१०.	चित्र पट	१७०
११.	रेडियो	१७५
१२.	छत्रपति शिवाजी	१७८
१३.	महात्मा गांधी	१८३
१४.	बेसिक शिक्षा पद्धति	१६१
१५.	स्त्री शिक्षा	१६४
१६.	राष्ट्र भाषा	१६८
१७.	उच्च शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो	२०२
१८.	प्राचीन और अर्वाचीन विद्याभ्यास ढंग	२०६
१६.	पुस्तकालय और वाचनालय	२११
२०.	ग्राम्य जीवन	२१५
२१.	हमारे ग्रामवासी	२१८
२२.	मुकता या द्वादशा	२२२
२३.	बाल विवाह	२२६
२४.	भारत वर्ष में ग्राम सुधार	२३१
२५.	हमारे गाँवों के उद्योग धंधे	२३४
२६.	कृषि कर्म का महत्व	२३६
२७.	विद्यार्थी जीवन	२४२
२८.	स्वावलंबन	२४७
२६.	सत्संग	२५२
३०.	व्यायाम	२५६
३१.	मादक वस्तुएँ	२६१

विषय		पृष्ठ
३२.	क्षमा	२६५
३३.	क्रोध	२६६
३४.	कर्तव्य पालन	२७२
३५.	स्वदेश प्रेम	२७३
३६.	नागरिकता के अधिकार	२८०
३७.	भारत को समृद्ध बनाने के साधन	२८४
३८	जीवन में अहिंसा का महत्त्व	२८७
३६.	युद्ध से हानि लाभ	२६१
४०.	आधुनिक आविष्कार	२६४
४१.	पाश्चात्य सभ्यता का भारत पर प्रभाव	२६८
४२	मनोरंजन के आधुनिक साधन	३०३
४३.	देशाटन	३०६
४४.	मितव्ययता	३०६
४५.	अछूतोद्धार	३१२
४६.	कमीज की आत्म कहानी	३१५
४७.	कमल की आत्म कहानी	३१८
४८.	रुपये की आत्म कहानी	३२१

पहला अध्याय

व्यावहारिक व्याकरण

व्यावहारिक व्याकरण

पहला अध्याय

१ भाषा और व्याकरण

—:※:—

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उत्तम खाद्य सामग्री, वस्त्र, भवन इत्यादि के पर्याप्त मात्रा में होते हुए भी वह एकाकी जीवन व्यतीत करना दुःसाध्य सा समझता है। वह दूसरे से विचार-विमर्श आदि किये बिना जीवन-यापन करने में कठिनाई महसूस करता है।

सांसारिक मानव आदि काल से ही अपने भावों का प्रकाशन सांकेतिक चिह्नों अथवा अन्य साधनों द्वारा करता रहा है। 'भाषा' इन सब साधनों में इस काम के लिए सबसे श्रेष्ठ साधन है। भाषा के दो रूप रहा करते हैं। एक रूप तो 'जन साधारण की बोलचाल की भाषा' है और दूसरा रूप 'साहित्यिक भाषा'। जब बोलचाल की भाषा में साहित्यिक रचना होने लगती है तब उसके स्वरूप को दूसरी भाषा ग्रहण कर लेती है।

भाषा शब्दों से बनती है। यदि भाषा में शब्दों का प्रयोग उचित स्थान पर नहीं हुआ तो अर्थ के भ्रष्ट हो जाने का भय रहता है। अशुद्धियों से परिपूर्ण भाषा भाषा नहीं कही जासकती। इसी लिए भाषा का शुद्ध तथा सुसंस्कृत होना परमावश्यक है।

भाषा को शुद्ध और सुघरी बनाने का काम व्याकरण द्वारा होता है। व्याकरण में उन नियमों और सिद्धान्तों का विवेचन होता है जो भाषा को शुद्ध रूप से लिखी तथा बोली जाने योग्य बनाते हैं मनुष्य के लिए सामाजिक नियमों की भांति व्याकरण के नियमों का पालन करना बहुत ही आवश्यक है।

साहित्य में व्याकरण का वही स्थान है जो शरीर में प्राणी के मुख का है। यद्यपि कुछ विद्वानों का ऐसा विचार है कि भाषाके व्यवहार में व्याकरण का आवश्यकता नहीं होती परन्तु यह बात सर्वत्र ही लागू नहीं हो सकता। यदि भाषा को पूरी स्वतंत्रता मिल जायेगी तो साहित्य के सुव्यवस्थित रूप के अव्यवस्थित बन जाने की पूरी आशंका है। हाँ, यह अवश्य मानना पड़ेगा कि भाषा को व्याकरण के भारी नियमों से इतना न लाद दिया जाय कि उसकी स्वाभाविकता नष्ट हो जाय।

व्यावहारिक जीवन में जितनी सी हिन्दी जानने की आवश्यकता है उतनी सी ही व्याकरण की भी है। हिंदी भाषा अन्य भाषाओं की अपेक्षा अपना कुछ विशेष महत्व रखती है। इस की वर्णमाला का निर्माण पूरे वैज्ञानिक ढंग से हुआ है। इस भाषा में जैसा हम बोल सकते हैं वैसा ही लिख भी सकते हैं। एक एक शब्द के अनेक अर्थ होने के कारण थोड़े से शब्दों में ही बहुत कुछ कह सकते हैं। व्यावहारिक जीवन में हमारे लिए यह भाषा बड़े काम की है। यद्यपि यह हमारी मातृ भाषा है तथापि इसका प्रयोग सुचारु तथा सुव्यवस्थित रूप से करने के लिए हमें थोड़ा सा इसके व्याकरण का ज्ञान होना ही चाहिये।

व्यावहारिक जीवन में व्याकरण की जिन जिन खास बातों को जानने की आवश्यकता है उन्हीं को इस अध्याय में

स्थान दिया गया है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

१. भाषा से आप क्या समझते हैं ?
२. भाषा और व्याकरण का क्या सम्बन्ध है ?
३. हिंदी भाषा अन्य भाषाओं की अपेक्षा अच्छी क्यों मानी जाती है ?
४. व्याकरण के नियमों का पालन करना क्यों आवश्यक है ?
५. भाषा को व्याकरण के भारी नियमों से अधिक दबा देना अच्छा क्यों नहीं समझा जाता ?

२ शब्द और उनके भेद

जो कुछ कान से सुना जाय वही 'शब्द' है। हम अपने कानों से प्रति दिन दो प्रकार के शब्द सुनते हैं—एक तो 'निरर्थक शब्द' जिनका कोई अर्थ नहीं निकलता जैसे आँय, शाँय अल्ल, बल्ल इत्यादि और दूसरे 'सार्थक शब्द' जिनके सुनने पर हमें किसी अर्थ का बोध होता है जैसे साधु, अध्यापक, कुर्सी, कलम इत्यादि। अब बनावट (व्युत्पत्ति), माया (उत्पत्ति) और परिवर्तन (विकार) की दृष्टि से यह देखना है कि हमें कितने प्रकार के शब्द दिखाई या सुनाई देते हैं। इनका ब्योरा संक्षेप में नीचे दिया जाता है—

बनावट या व्युत्पत्ति के विचार से शब्दों के भेद :— जब हम शब्दों की बनावट की ओर ध्यान देते हैं तब हमें मालूम होता है कि कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके यदि खंड किए जायँ तो कुछ अर्थ नहीं निकलता जैसे हाथी, ईंट, घड़ी इत्यादि। ऐसे शब्दों को रूढ़ शब्द कहते हैं। कुछ शब्द ऐसे हैं जो दूसरे शब्दों के मेल से बने हुए मालूम होते हैं जैसे राजपूत, कलमदान, कुम्भकार इत्यादि। ऐसे शब्दों को यौगिक शब्द कहते हैं। इन दोनों प्रकार के शब्दों के अतिरिक्त कुछ ऐसे शब्द हैं जो अन्य शब्दों के मेल से तो बनते हैं किंतु उनका प्रयोग किसी विशेष अर्थ के प्रकट करने के लिए होता है जैसे 'लम्बोदर' शब्द से 'लम्बे पेट' का अर्थ स्पष्ट है परंतु यह शब्द गणेश जी के लिए प्रयुक्त होता है। जलज, पयोद, पङ्कज आदि ऐसे ही शब्द हैं। ये शब्द 'योगरूढ़' शब्द कहलाते हैं।

भाषा या उत्पत्ति के विचार से शब्दों के भेद :—जब हम कुछ पढ़ते हैं या सुनते हैं तब बहुत से शब्द हमारे कानों में आते हैं। भाषा की दृष्टि से यदि उनकी ओर विशेष ध्यान दें तो बहुत से शब्द हमें एकसे मालूम होते हैं और बहुत से एक दूसरे से बिलकुल भिन्न। उदाहरणार्थ स्टेशन शब्द के लिए हम कहेंगे कि यह अंग्रेजी भाषा का है; प्रभात' के लिए कहेंगे कि यह शब्द संस्कृत से लिया गया है और 'कूँची' के लिए कहेंगे कि ग्रामीण भाषा का है, इत्यादि। शुद्ध संस्कृत के जिन शब्दों का प्रयोग हिंद. में होता है उन्हें 'तत्सम शब्द' कहते हैं जैसे सूर्य, घृत, लवण, स्पर्श, कोण इत्यादि। कई ऐसे शब्दों का प्रयोग भी हम प्रति दिन करते हैं जो भाषा के विचार से संस्कृत के हैं परंतु उनका रूप कुछ बिगड़ गया है, जैसे सूरज, लौन, भगत, छिन दच्छिना, दीठि इत्यादि। ऐसे शब्दों को तद्भव शब्द कहते हैं। आवश्यकतानुसार बनाए हुए प्रांतीय शब्द जैसे बरता (स्लेट पर लिखने का), मैंड़ी, रावटी, हुचरया आदि देशज शब्द कहलाते हैं। दूसरी भाषाओं से—दूसरी का अर्थ यहाँ विदेशी समझना चाहिये—लिए हुए शब्द जैसे लालटेन, बैटरी, स्टेशन, एंजिन इत्यादि 'विदेशी शब्द' कहे जाते हैं और ऐसे शब्द जो पशु पक्षियों की बोली या किसी पदार्थ की ध्वनि के आधार पर बने हैं 'अनुकरण शब्द' कहलाते हैं, जैसे दहाड़ना, चिंघाड़ना फूँफूँ इत्यादि।

परिवर्तन या विकार के विचार से शब्दों के भेद :—परिवर्तन या विकार की दृष्टि से शब्दों की ओर ध्यान दिया जाय तो दो प्रकार के शब्द रात दिन हमारे सुनने में आते हैं। कुछ तो ऐसे हैं जो लिंग, वचन और काल आदि के अनुसार बदलते रहते हैं। ऐसे शब्द 'विकारी शब्द' कहलाते हैं। जिन विकारी शब्दों से

किसी मनुष्य जगह चीज या जानवर के नाम का बोध होता है वे 'संज्ञा' कहलाते हैं। जो संज्ञा के बदले में आते हैं, वे 'सर्वनाम' शब्द हैं, जैसे वह, मैं, हम, तुम, इसने, उसने इत्यादि। जो संज्ञा का गुण, अवगुण बताते हैं वे 'विशेषण' हैं जैसे काला, पीला, मीठा, खट्टा, अच्छा, बुरा इत्यादि और जिनसे काम का करना या होना पाया जाय वे 'क्रिया' शब्द हैं, जैसे खाना, पीना, उठना, बैठना इत्यादि। विकारी शब्दों के यही चार भेद हैं।

परिवर्तन के विचार से दूसरी प्रकार के शब्द वे हैं जो लिंग, वचन, काल आदि के अनुसार बदलते नहीं हैं। इन्हें 'अविकारी शब्द' कहते हैं। जैसे शीघ्र, धीरे धीरे, आज, कल, परसों इत्यादि। विकारी शब्दों की भाँति इनके भी चार ही भेद हैं। क्रिया की विशेषता बताने वाले अविकारी शब्द 'क्रिया विशेषण' हैं, जैसे शीघ्र, आज, धीरे धीरे इत्यादि। दो शब्दों या वाक्यों को मिलाने वाले 'संयोजक या समुच्चय बोधक' अविकारी शब्द हैं, जैसे और, किंतु, परंतु इत्यादि। सम्बंध बताने वाले 'सम्बंध सूचक' अविकारी शब्द हैं। विस्मय या आश्चर्य प्रगट करनेवाले 'इंगित सूचक या विस्मयादि' बोधक अविकारी शब्द कहलाते हैं।

अ—समानार्थक या पर्यायवाची शब्द

अनल — पावक, अग्नि, आग, कृशानु, दहन, ज्वलन इत्यादि।

अश्व — घोड़ा, हय, तुरंग, वाजि, घोटक इत्यादि।

अंश — भाग, खण्ड ।

आमोद — आनंद, हर्ष, प्रमोद, प्रीति सुख इत्यादि ।

आकाश — गगन, व्योम, अनन्त नभ अन्तरिक्ष इत्यादि ।

इच्छा — वांछा, कामना, लालसा लिप्सा आकांक्षा इत्यादि ।

ईश्वर — परमेश्वर, प्रभु, ब्रह्म, ईश इत्यादि ।

कमल — जलज, पंकज, पद्म, अरविंद, अम्बुज इत्यादि

कामदेव — अनंग, मदन, मन्मथ, मनसिज, काम, रतिपति, मनोज, पंचशर कुसुमबाण इत्यादि ।

क्रोध — रोष, कोप, अमर्ष, गुस्सा इत्यादि ।

गणेश — गजानन, एकदन्त, लम्बोदर, गिरिजानन्दन विनायक, गणपति इत्यादि ।

गधा — गर्दभ, खर वैसाख-नंदन इत्यादि ।

गंगा — सुरसरिता, विष्णुपदी जाह्नवी, भागीरथी देवनदी इत्यादि ।

गृह — घर, सदन, सद्म, निकेतन, आगार, शाला, कुटी, मन्दिर इत्यादि ।

चंद्र — इन्दु, विधु, सोम, मृगाङ्क, कलानाथ, हिमांशु, शशि, शशांक, सुधांशु, सुधाकर, राकेश शशि ।

दिन — दिवस, वासर, अहन् इत्यादि ।

दूध — क्षीर, पय, दुग्ध ।

दुःख — व्यथा, खेद, शोक, संकट, क्लेश, यातना, वेदना, क्षोभ, सन्ताप, विषाद इत्यादि ।

दैत्य — दानव, असुर, दनुज इत्यादि ।

नदी — तरंगिणी, तटिनी, सरित् इत्यादि

नक्षत्र — तारका, तारा, उडु ।

नीर — अम्बु, तोय, पय, अमृत, उदक, वारि, जीवन,

सलिल, रस, घनरस, इत्यादि ।

नेत्र -- लोचन चक्षु आँख इत्यादि ।

पहाड़ — गिरि, अचल, शैल, नग पर्वत इत्यादि ।

पत्थर — प्रस्तर, शिला, पाहन, पाषाण इत्यादि ।

पार्वती — गौरी, काली शिवा, भवानी ईश्वरी, दुर्गा, गिरिजा, अम्बिका इत्यादि ।

पृथ्वी — धरा, वसुधा, वसुन्धरा, अवनि, मही, भू, अचला इत्यादि ।

पेड़ — शाखी, विटप महीरुह, तरु, द्रुम, तरुवर, वृक्ष ।

बन्दर — कीश, मर्कट, वानर, कपि, शाखामृग इत्यादि ।

बादल — मेघ जलधर वारिद, अभ्र इत्यादि ।

बिजली — विद्युत, चपला, सौदामिनी, दामिनि, चंचला, प्रभा, तड़ित इत्यादि ।

बाल — कच, चिकुर, कुन्तल, केश, शिरोरुह ।

भूषण — आभरण, अलंकार, आभूषण, विभूषण इत्यादि ।

भौंरा — मधुप, मधुकर, अलि, भृंग, भ्रमर, षटपद इत्यादि ।

मदिरा — हाला, वारुणी सुरा, मद्य, कादम्बरी इत्यादि ।

मुर्गा — अरुणशिखा कुक्कुट, ताम्रचूड़ इत्यादि ।

मोर — नीलकण्ठ केकी, शिखी, मयूर इत्यादि ।

रात्रि — निशा विभावरी, रजनी, यामिनी इत्यादि ।

राजा — नृप, भूप, भूपति, नरेन्द्र नरनाथ इत्यादि ।

रुधिर — लोहित, शोणित, रक्त इत्यादि ।

वस्त्र — वसन, पट, आच्छादन, चैल, अंशुक ।

वंश — गोत्र कुल, अभिजन इत्यादि ।

विष्णु — केशव, माधव, कृष्ण, दामोदर, पीताम्बर, जनार्दन, चक्रपाणि चतुर्भुज, पुरुषोत्तम, श्रीपति,

पद्मनाभ अच्युत, ऋषिकेश वनमाली, विष्णु।

विधि — ब्रह्मा पितामह, स्वयंभू, चतुरानन, प्रजापति इत्यादि।

विपिन — कानन, वन, गहन, अरण्य इत्यादि।

शरासन — धनुष, चाप, कोदण्ड इत्यादि।

शर — विशिख बाण इत्यादि।

शत्रु — अरि, अमित्र, रिपु, बैरी इत्यादि।

शब्द — ध्वनि, निनाद, नाद, रव इत्यादि।

शिव — पशुपति, ईश, शंकर, चंद्रशेखर, गिरीश, रुद्र, गंगाधर, महादेव, त्रिलोचन, शंभु, मृत्युञ्जय, पिनाकी, श्रीकण्ठ, वामदेव, इत्यादि।

शकुली — मीन, मछली, झष, मत्स्य इत्यादि।

शरीर — काया कलेवर, गात्र, वपु देह, तन इत्यादि।

सर्प — विषधर, भुजंग, अहि, व्याल, फणी, उरग, नाग, पन्नग, पन्नग, गूढ़पाद इत्यादि।

समुद्र — सागर, उदधि, रत्नाकर, जलनिधि इत्यादि।

स्त्री — अबला, नारी, वामा, वधू, वनिता, महिला, पत्नी इत्यादि।

सिंह — केसरी, हरि, मृगेन्द्र, मृगाधिप।

सूअर — बराह, सूकर, कोल, भूदार इत्यादि।

सुरपति — इंद्र, मघवा, पुरन्दर, शक्र, वासव, महेन्द्र, देवराज इत्यादि

समीर — हवा, अनिल, मारुत, सदागति, वायु, पवन, प्रभञ्जन, पवमान, इत्यादि

समूह — यूथ, दल, मण्डली, टोली, जत्था, गण, समुदाय, समाज इत्यादि।

सरणि — पथ, राह, अयन, मार्ग, पद्धति, राह, इत्यादि।
सभा — गोष्ठी, समिति, मण्डली, संसद, परिषद्
सोना — कनक, हिरण्य, हाटक, सुवर्ण, कांचन इत्यादि
हाथी — हस्ती, दन्ती, गज, मतंग, नाग, करी, गयन्द, कुंजर इत्यादि
ज्ञानी — पण्डित, सुधी, विद्वान, धीमान्, कोविद, धीर, बुध।

आ — विपरीत अर्थोंवाले शब्द

अपकार	उपकार	उत्कृष्ट	निकृष्ट
अतिवृष्टि	अनावृष्टि	उत्थान	पतन
अर्थ	अनर्थ	उदार	कृपण
अंधकार	प्रकाश	उदय	अस्त
अज्ञान	ज्ञान	उन्नति	अवनति
अर्वाचीन	प्राचीन	उन्मीलन	निमीलन
अनुकूल	प्रतिकूल	उन्मज्जन	निमज्जन
अनुराग	विराग	एक	अनेक
आदान	प्रदान	ऐश्वर्य	अनैश्वर्य
आदर	अनादर	कुटिल	अकुटिल
आविर्भाव	तिरोभाव	क्रय	विक्रय
आतप	अनातप	कोमल	कठोर
आय	व्यय	खंड	पूर्ण
आतुर	अनातुर	खल	ज्ञानी
आचार	अनाचार	गुण	दोष
आकाश	पाताल	गुरु	लघु
इधर	उधर	चतुर	मूर्ख

छली — साधु		यहाँ — वहाँ	
जय — पराजय		रात — दिन	
जड़ — चेतन		लाभ — हानि	
जीवन — मरण		वीर — डरपोक	
ज्येष्ठ — कनिष्ठ		वामन — दीर्घ	
देव — दानव		विष — अमृत	
दृढ़ — शिथिल		विधवा — सधवा	
द्रुत — मंद		शिक्षित — अशिक्षित	
निंदा — स्तुति		शिव — अशिव	
निग्रह — अनुग्रह		शीत — ऊष्ण	
निर्गुण — सगुण		शत्रु — मित्र	
निर्धन — धनाढ्य		शीघ्र — शनैः	
नीचे — ऊपर		सम — विषम	
पंडित — मूर्ख		श्वास — उच्छ्वास	
पास — दूर		संश्लेषण — विश्लेषण	
बंधन — मोक्ष		स्थूल — सूक्ष्म	
भूचर — खेचर		स्थावर — जंगम	
मिथ्या — सत्य			

इ—विशेष जीवधारियों के लिए विशेष शब्द

(१) गाय—रम्भाना
(२) भैंस—रड़कना
(३) बकरी—मिमियाना
(४) हाथी—चिंघाड़ना
(५) ऊंट—बलबलाना
(६) घोड़ा—हिनहिनाना
(७) गधा—रेंकना
(८) कुत्ता—भोंकना
(९) बिल्ली—म्याऊँ म्याऊँ करना
(१०) सिंह—गरजना
(११) सियार—हुआ हुआ

करना

(१२) सूअर—घुरघुराना

(१३) तोता—पढ़ना

(१४) मैना—बोलना

(१५) कबूतर—गटरगों करना

(१६) मुर्गा—कुकड़ूकूँ करना

(१७) कौआ—काँव काँव करना

(१८) पपीहा—पी पी करना

(१९) भौंरा—गुञ्जारना

(२०) चिड़िया—चहकना

(२१) सर्प—फुसकारना

(२२) मक्खी—भिनभिना ना

(२३) मेंढ़क टर्र टर्र करना

(२४) कोयल—कुहू कुहू करना

(२५) तीतर—पटीलो पटीलो करना

ई—विशेष वस्तुओं के लिए विशेष शब्द

(१) भंडा—फहराना

(२) मन—डावाँडोल

(३) चीता—मंडराना

(४) नाव—डगमगाना

(५) आँखें—चौंधियाना

(६) आँसू—डबडबाना

(७) पत्ता—खड़कना

(८) साँस—चलना

(९) दाँत—कटकटाना

(१०) पंख—फड़फड़ाना

(११) दिल—धड़कना

(१२) घड़ी—टकटक करना

(१३) चारपाई—चरचराना

(१४) तेल—छनछनाना

(१५) बिजली—चमकना

अभ्यास के लिए प्रश्न

१. निम्नलिखित शब्दों को अपनी कापी में लिखकर प्रत्येक के सामने लिखिए कि वह भाषा के विचार से किस जाति का शब्द है—

मोटर, टिकट, बाग, यज्ञ, कीरति, श्रवण, मीटिंग, कौन, दीठि, हुक्म, पाठशाला, दशानन, दूध, लालटेन, स्नेह, योगी, दर्पण, जिह्वा, दन्त, श्वास, घर।

२. नीचे लिखे शब्दों के तत्सम रूप बताइए—
जन्म, दीरध, गुन, पौन, धरनी, प्रवीन, पंछी, खीर, जीभ और आग।

३. निम्न लिखित शब्दों के तद्भव रूप लिखिए—
याद, सुवर्ण, पत्र, वर्ष, खटिका, प्रोस, परीक्षा, भवन, चन्द्र और रात्रि।

४. नीचे लिखे शब्दों को ध्यान से पढ़िए और इनकी बनावट पर विचार करके बताइए कि इनमें कौन २ से रूढ़, यौगिक अथवा योगरूढ़ शब्द हैं—
खीर, समुद्र, चारपाई, पुजारी, संसार, घोड़ा, रत्नाकर, मन मृगराज, लोटा, पंजाब, लम्बोदर, पाठशाला, आकाश, हय, चौराहा, पयोद, दिवाकर, ब्रह्मा, सिंह।

५. परिवर्तन के विचार से शब्दों को कितने भागों में बाँटते हैं? उनके नाम बताइए।

६. विकारी शब्द कितने प्रकार के हैं? प्रत्येक के चार चार उदाहरण दीजिए।

७. अविकारी शब्दों के चारों भेदों की व्याख्या दो दो उदाहरण देकर कीजिए।

८. निम्न लिखित शब्दों के नाम अपनी कापी में लिखकर प्रत्येक के आगे दो बातें लिखिए—वह शब्द विकारी है या अविकारी और किस भेद के अन्तर्गत आता है?
उज्ज्वल, शीघ्र, लड़का, परसों, उत्तम, खट्टा, वह, कायर, धीरे धीरे, चतुर, सोमवार, दुष्ट, भयानक, कागज़, ज्येष्ठ, तुम

पुस्तक, ओह, शीतल, वायु, सरल, परंतु, मोहन, और, नीच, पश्चात्ताप।

९. रेखांकित शब्दों के भेद परिवर्तन के विचार से बताओ—

(१) उस साहसी नवयुवकने अपने शत्रुओं को ऐसे करारे उत्तर दिए कि वे दहल गए।

(२) धन्य है उसका साहस और धन्य है उसकी शूरवीरता।

(३) ओह! तुम आ गए, बहुत दिनों के बाद मिले हो।

(४) कुछ समय मले ही लग गया परंतु तुमने वही कर दिखाया जो कहा था।

(५) जितना अधिक विरोध होता है दृढ़प्रतिज्ञ मनुष्य उतने ही अधिक अपनी प्रतिज्ञा पर आरूढ होते हैं।

१०. निम्न लिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द बताइए—

चंद्र, स्वर्ण, सिंह, कमल, पत्थर, नेत्र, दामिनी, वृक्ष, पार्वती, भूपाल, पंडित, भवन, बादल, धनुष, अग्नि, सर्प, कामदेव, पहाड़, हाथी, कमल।

११. निम्न लिखित शब्दों के विपरीत अर्थोंवाले शब्द लिखिए

गुण, उत्कर्ष, प्राचीन, उन्नति, उत्थान, कोमल, वीर, स्वतंत्र, लोभ, निर्मल।

३ शब्दों में प्रभेद

कुछ ऐसे शब्द हैं जो उच्चारण में मिलते जुलते से हैं परंतु अर्थ में एक दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं। उनके रूपमें बहुत ही थोड़ा अंतर है परंतु अर्थ में बहुत अंतर है। निम्न लिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए—

१. सिता मिलाकर दूध पीना बलप्रद है।

२. सीता को रावण ने अशोक वाटिका में रक्खा था।

३. मुझ में कुछ लिख सकने की जो शक्ति है वह भगवान की कृपा का प्रसाद है।

४. राजकुमारी के लिए महाराज ने एक विशाल प्रासाद बनवाया।

५. यमुना के कूल पर सहस्त्रों तमाल वृक्ष हैं।

६. उसकी बातचीत से वह श्रेष्ठ कुलका मालुम होता है।

७. वह अविराम परिश्रम कर रहा है।

८. इन अभिराम भवनों ने मुझे बड़ा आकर्षित किया।

९. भारत के दक्षिण में लंका द्वीप है।

१०. अंधेरे में दीप का प्रकाश ही अच्छा लगता है।

पहले और दूसरे वाक्यो में 'सिता' और 'सीता' शब्दों के रूप में बहुत थोड़ी भिन्नता है परंतु पहले का अर्थ 'मिश्री' है और दूसरे का अर्थ महाराज रामचंद्र की पत्नी। इसी प्रकार तीसरे तथा चौथे वाक्यों में 'प्रसाद' और 'प्रासाद' शब्दों में भी

बहुत हैं थोड़ा अंतर दिखाई देता है परंतु पहले का अर्थ है 'फल' और दूसरे का 'महल'। पाँचवें और छठे वाक्यों के 'कूल' और 'कुल' शब्द रूप में बहुत मिलते हैं परंतु पहले का अर्थ 'किनारा' और दूसरे का 'वंश' है। यही बात सातवें तथा आठवें वाक्यों के 'अविराम' और 'अभिराम' शब्दों के लिए है। पहले का अर्थ 'लगातार' और दूसरे का 'सुन्दर' है। नवें तथा दसवें वाक्यों में 'द्वीप' और 'दीप' शब्द बहुत मिलते हैं परंतु 'द्वीप' का अर्थ टापू है। 'दीप' दीपक के लिए प्रयोग में आता है।

नीचे कुछ ऐसे शब्द अर्थ सहित लिखे जाते हैं। विद्यार्थी इनका वाक्यों में प्रयोग इस प्रकार करें कि अर्थ स्पष्ट झलक पड़े :—

(१) अंस = कंधा
अंश = हिस्सा
(२) ओर = तरफ
और = दूसरा, फिर
(३) अपेक्षा = बनिस्बत
उपेक्षा = निरादर
(४) अनिल = हवा
अनल = अग्नि
(५) अविराम = लगातार
अभिराम = सुन्दर
(६) उद्धत = उद्दण्ड
उद्यत = तैयार
(७) कुल = वंश
कूल = किनारा
(८) गृह = घर
ग्रह = सूर्य, चंद्र, नक्षत्र
(९) छात्र = विद्यार्थी
क्षात्र = क्षत्रिय
(१०) जलद = बादल
जलधि = समुद्र
(११) तरणि = सूर्य
तरणी = नाव
(१२) तरंग = लहर
तुरंग = घोड़ा
(१३) द्वीप = टापू
दीप = दीपक
(१४) दूत = खबर नवीस
द्यूत = जूआ
(१५) प्रसाद = फल, प्रसन्नता

	प्रासाद = महल		लक्ष्य = उद्देश्य
(१६)	पानी = जल	(१६)	सीता = रामचन्द्रजी
	पाणि = हाथ		की स्त्री
(१७)	प्रकार = ढंग		सिता = मिश्री
	प्राकार = परकोटा	(२०)	सूर = सूर्य
(१८)	लक्ष = एक लाख		शूर = वीर

इसी प्रकार कुछ ऐसे शब्द भी हैं जिनका अर्थ तो लगभग वही है परंतु उनका प्रयोग भिन्न भिन्न भावों तथा बातों के प्रदर्शन के लिए होता है। वे एकार्थक शब्द हैं परंतु उनके प्रयोग में भिन्नता है। नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए

१. रामने अपने गुरु की बड़ी सेवा की।
२. जब वह बीमार पड़ता था गुरु जी भी उसकी सुश्रूषा करते थे।
३. वह बहुत ही दुखी रहता है परंतु उसके निर्दयी रिश्तेदार उस पर दया नहीं करते।
४. राम पर गुरु जी की बड़ा कृपा है।

इन चारों वाक्यों में मोटे अक्षरोंवाले शब्दों पर ध्यानदीजिए। पहले और दूसरे वाक्य में 'सेवा' तथा 'सुश्रूषा' शब्दों का अर्थ लगभग एक सा है परंतु 'सेवा' शब्द का प्रयोग पूज्य गुरुओं और देवताओं के लिए होता है। रोगी की जो खिदमत की जाती है वह 'सुश्रूषा' है। इसी प्रकार तीसरे और चौथे वाक्यों में 'दया' और 'कृपा' एकार्थक शब्द हैं परंतु 'दया' का तब प्रयोग होता है जब किसी का दुख देख कर हृदय पिघल जाय। कृपा सहायता के भाव के लिए आता है।

नीचे कुछ ऐसे शब्दों की व्याख्या की जाती है। विद्यार्थीगण उनका वाक्यों में प्रयोग करें —

१. अलौकिक और अस्वाभाविक:— जो बात लोक या समाज में प्रायः न देखने में आती हो वह अलौकिक है जैसे "कृष्ण का काली नाग के फन पर नृत्य करना एक अलौकिक कार्य था"। जो स्वभाव के विरुद्ध हो वह अस्वाभाविक है जैसे "सच्चे मित्र के लिए अपने मित्र को दुख पहुँचाना अस्वाभाविक है"।

२. अस्त्र और शस्त्र:— वे हथियार जो दूर से फैंके जाँय जैसे बाण, गोली आदि, अस्त्र हैं और वे हथियार जो हाथ में रक्खे जाँय जैसे तलवार, लाठी, आदि शस्त्र हैं।

३. आधि और व्याधि:— मानसिक कष्ट का नाम 'आधि' है और शारीरिक कष्ट जैसे ज्वर, सिरदर्द आदि व्याधियाँ हैं।

४. ईर्ष्या और द्वेष:— दूसरों को उन्नति करते देखकर बिना कारण बुरा मानना और उनको हानि पहुँचाने के भाव मन में रखना ईर्ष्या रखना है। किसी कारण वश शत्रुता रखने का नाम द्वेष है।

५. उत्साह और साहस:— उत्साह वह उमंग है जो हृदय में पैदा होती है। साधन के अभाव में भी काम करने की लगन का नाम साहस है।

६. ग्लानि और लज्जा:— मन में जो शर्म पैदा होती है वह लज्जा है। मन में पैदा हो जाने वाले दुख का नाम ग्लानि है।

७ चेष्टा और उद्यमः— किसी कार्य के लिए प्रयत्न करने को चेष्टा कहेंगे और किसी काम में लगकर डटे रहना उद्यम है।

८. श्रद्धा और भक्तिः— किसी के प्रति अनुराग और विश्वास का भाव जब हृदय में पैदा होता है तब इसको उसके प्रति श्रद्धा उत्पन्न होना कहते हैं। किसी पूज्य या देवता से जो प्रेम हम करते हैं, वह भक्ति है।

९. दया और कृपाः— किसी का दुःख देखकर हृदय पिघल जाता है, यह दया है। सहायता के भावों के लिए 'कृपा' शब्द का प्रयोग होता है।

१० प्रेम और स्नेह :— प्रेम किसी के प्रति स्वाभाविक आकर्षण है। स्नेह छोटों के प्रति होने वाला अनुराग है।

११. सेवा सुश्रूषाः— पूज्य पुरुषों और देवताओं के लिए 'सेवा' तथा रोगियों की टहल बंदगी के लिए 'सुश्रूषा' शब्द का प्रयोग होता है।

१२. शठ और मूर्ख :— शठ तो सुधर सकता है, वह छोटे दर्जे का होता है। मूर्ख कभी नहीं सुधर सकता। गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है—

"शठ सुधरहिं सत संगति पाई"

दूसरे स्थान पर उन्होंने कहा है—

"मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलहिं विरंचि सम"।

१३. प्रणय और वात्सल्य :— स्त्री के लिए जो प्रेम है

वह 'प्रणय' है। संतान, शिष्य आदि के लिए जो प्रेम है वह 'वात्सल्य' है।

१४. दुःख, खेद, क्षोभ, शोक, विषाद :—साधारण अवस्था में दुःख; पछतावे में खेद; अनिष्ट होजाने पर क्षोभ; मर जाने पर शोक; बहुत ही ज्यादा दुख होने पर विषाद जिसमें मनुष्य किंकर्तव्य विमूढ़ हो जाता है और इतना व्याकुल रहता है कि उसे कुछ ज्ञान नहीं रहता।

१५. स्पर्द्धा और डाहः— दूसरे को उन्नति करते देखकर खुद भी उन्नति करना चाहना स्पर्द्धा है। दूसरे की उन्नति को देखकर कुढ़ना 'डाह' है। स्पर्द्धा अच्छी चीज है, डाह बुरा है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

१. निम्न लिखित शब्दों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनके अर्थ का सूक्ष्म अन्तर स्पष्ट हो जाय —
सेवा और सुश्रूषा; प्रेम और स्नेह; ईर्ष्या और द्वेष; उत्साह और साहस; श्रद्धा और भक्ति।

२. नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में ऐसा प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाय—
मद, गृह, कुल, कूल, अविराम, अभिराम, अनिल, अनल, द्वीप, दीप, अपेक्षा, उपेक्षा, ओर, और, तरणि, तरणी, तरुणी, तुरंग, तरंग, अंश, अंस।

३. दुःख, खेद, क्षोभ, शोक और विषाद शब्दों का अन्तर स्पष्ट करके प्रत्येक को दो दो वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

४. 'शठ' और 'मूर्ख' के प्रति तुलसीदासजी ने क्या कहा है ?

५. स्पर्द्धा और दाह में आप किसको अच्छा समझते हैं और क्यों ?

६. निम्न लिखित शब्दों में अन्तर बताइए —
निर्मल-निर्बल ; दल-दाल ; सीता-शिता ; प्राचीर — प्राचीन;
पानी-पाणी ; शर-सर ; स्वेद-श्वेत ; सदेह-संदेह ; कुल-कूल ;
सुत-सूत ।

७. निम्न लिखित जीव धारियों की बोली के लिए किन शब्दों का प्रयोग किया जाता है ?
गाय, भैंस, गधा, सर्प, चिड़िया, कबूतर, मोर, सिंह, भौंरा, बंदर ।

४—रिक्त-स्थानों की पूर्ति

रिक्त स्थान की पूर्ति करना हिन्दी लिखना सीखने के लिए बहुत उपयोगी है। विद्यार्थियों को इसका खूब अभ्यास करना चाहिये। पूर्ति करते समय रिक्त स्थानों में ऐसे ही शब्द रखे जावें जो उक्त स्थानों पर फबते हों और जिनके जुड़ जाने से पूरे वाक्य का अर्थ ठीक ठीक बैठ जाता हो। केवल शब्द भर देने से काम नहीं चलता। उन शब्दों का जो रिक्त स्थानों में लिखे जावें शेष शब्दों के साथ सम्बन्ध जुड़ जाना चाहिये, तभी वह पूर्ति ठीक समझी जावेगी। निम्न लिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों पर ध्यान दीजिए और उनमें उपयुक्त शब्द लिखिये—

१. ......परसों..........चला गया......उसको.........वहाँ लेजाया गया है।

२. राम.........बात का.........है, वह...........ही...... ...प्रतिज्ञा को.........करेगा।

३. ....के.......उसके रिश्तेदार.......बड़ा तंग......................।

४. यदि.........माँ बाप.........पूँजी न छोड़ गये होते तो.......रिश्तेदार...........की.........से उसकी..........देखता तक.........।

५. जब वह...........होगा,..........साथ की गई ज्यादतियों का...............जरूर लेगा।

६. वह भीतर ही भीतर..............है और..........रहता है, अवश्य ही.............रोग से...........होकर...........अकाल मृत्यु का.........होगा, यह बात.........पर प्रकट है

······· उसके रिश्तेदारों को ·· ·······नहीं आती। भगवान उसकी ······· करे।

७. वे ··········हैं कि ········ वह ····· दबा हुआ ·····तो वे ········ माल मारें।

८. देखें ·······कब तक उसे इस··············· रखते हैं ? भगवान उसकी········ ······ शीघ्र·············करेगा।

९. शरीर·······रक्खा जासकता है ·········नहीं, किसी के ······ विचारों को, कोई उसे कैद ··········· ·····, कदापि ······· बदल सकता।

१०. वे ·········जितना तंग ·········उतना ही वह अपने·········· पर······ ······दृढ़ होगा और··········आने पर उन ········· के अनुसार ही ··················।

विद्यार्थीगण इन रिक्त स्थानों की पूर्ति स्वतन्त्र रूप से करें और फिर इस पुस्तक में नीचे की गई पूर्ति से अपने द्वारा की गई पूर्ति को मिलावें। रिक्त स्थानों में भरे गये शब्द रेखांकित कर दिये गये हैं —

१. वह परसों कल्पितपुर चला गया परन्तु उसको बलात् वहाँ ले जाया गया है।

२. राम बात का धनी है, वह अवश्य ही अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करेगा।

३. धन के लोभी उसके रिश्तेदार उसे बड़ा तंग कर रहे हैं।

४. यदि उसके माँ बाप कुछ पूँजी न छोड़ गये होते तो कोई रिश्तेदार सहानुभूति की दृष्टि से उसकी ओर देखता तक नहीं।

५. जब वह बालिग होगा, उसके साथ की गई ज्यादतियों का बदला जरूर लेगा।

६. वह भीतर ही भीतर घुटता है और दुखी रहता है। अवश्यही किसी भीषण रोग से पीड़ित होकर वह अकाल मृत्यु का ग्रास होगा. यह बात उन पर प्रकट है तो भी उसके रिश्तेदारों को दया नहीं आती। भगवान उसकी रक्षा करे।

७. वे चाहते हैं कि उनसे वह सदा दबा हुआ रहे तो वे खूब माल मारें।

८. देखें वे कब तक उसे इस प्रकार क़ैद रखते हैं? भगवान उस की मनोकामना शीघ्र पूरी करेगा।

६. शरीर क़ैद रक्खा जा सकता है आत्मा नहीं, किसी के दृढ़ विचारों को कोई उसे क़ैद रखकर, कदापि नहीं बदल सकता।

१०. वे उसे जितना तंग करेंगे उतना ही वह अपने विचारों पर अधिक दृढ़ होगा और अवसर आनेपर उन विचारों के अनुसार ही काम करेगा।

निम्न लिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द लिखिये। शब्द ऐसे हों जिनसे पूरे वाक्य के अर्थ में सुन्दरता आ जाय। अपने अध्यापक को दिखाइये तथा उनसे संशोधन करवाइये—

१. माँ बाप को चाहिए कि ···· विवाह के मामले में अपनी ·· ·········के साथ नादिरशाही ···········न करें।

२. जिसके··············न हों उसके घनिष्ठ सम्बन्धियों का यह ·············है············ वे विवाह के मामले में ··········· विचारों का भी ···· · ·······रक्खें।

३. प्रायः ··········मामलों में··············अपनी बातपर अड़ जाते हैं और इस···············कई नवयुवकों का जीवन······ हो जाता है।

४. विद्याध्ययन के सम्बन्ध में ………की रुचि पहली चीज है जिसका उसके संरक्षकों को ………ध्यान ……… चाहिये।
५. जो विद्यार्थी ………शिक्षा प्राप्त करना ……… है, उसे उस की ………आगे……… ………न करने देना महा पाप है।
६. चाहे………न करनी हो, विद्याध्ययन मनुष्य मात्र के लिए ………… है।
७. सत्रह अठारह वर्ष की आयु के पढ़े लिखे समझदार युवक के साथ………यदि तिरस्कारपूर्ण……… ……… करते हैं तो यह उनकी बहुत ……… है।
८. हुमायूँ अपने नाबालिग………अकबर को उसके फूफा बैरामखाँ को ……… ……… गया था। राज्य का सम्पूर्ण काम ………ही करता था, बैरामखाँ ने कभी नहीं……… ……… कि अकबर कुछ ………बने।
९. संसार में कई ………ऐसे हैं ……… दूसरों को ……… करते देख उनसे ………रखते हैं ……… सदा उनको ……… पहुँचाने की ……… बनाये रखते हैं।
१०. जाको जा पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलत, न कछु……… ॥
११. आलसी, पराक्रम हीन ……… झूठी निंदा से ……… वालों के ………कभी पूरे नहीं होते।
१२. ईश्वर भी ………सहायता करता है ………अपनी……… ……… आप कर सके।
१३. शरीर में बल जिस प्रकार………भोजन करने मात्र से……… ……… आता बल्कि उसको पचाने से……… ……… है, इसी प्रकार केवल कहने से कोई काम ……… होता बल्कि करके दिखाने से……… ……… है।

१४. भलाई का बदला भलाई से .... बनियों का सा व्यापार है परंतु .... मनुष्य भलाई का .... भी भलाई से .... देता उसके ...... कोई नीच नहीं।

१५. 'भाग्य में नहीं लिखा' .... सोचकर ललाट पर हाथ धरकर .... उचित नहीं क्योंकि भाग्य में लिखा होने पर भी तिलों में से .... कोल्हू में पेले .... नहीं निकलता। खूब प्रयत्न करने से .... सफलता .... है।

१६. जब कोई .... अपने निश्चय पर .... दृढ़ हो जाता है कि .... जाने की भी परवाह .... करता तब सब विरोध .... हो जाते हैं .... उसे भगवान .... देता है।

१७. अपने साथ किसी के द्वारा .... अहसानों को जो सज्जन हैं वे .... नहीं भूलते। अवसर आने पर उनका .... देते हैं।

१८. सूर्य बादलों से .... हुआ होने पर भी संसार के .... का नाश तो .... ही है, घोर संकट की और मजबूरी की परिस्थिति में रहते हुए भी सच्चे मित्र .... मित्र का .... दूर किए .... नहीं चैन लेते।

१९. दो मित्रों में मन मुटाव .... कराने के लिए उनको एक दूसरे के प्रति .... कही जाती हैं जिनसे उनके .... में एक दूसरे के लिए .... पैदा हो जाय परंतु .... बुद्धि-मान हैं .... कभी ऐसी .... पर .... नहीं करते।

२०. सुदामा और कृष्ण का साथ छूटे काफी अर्सा हो गया था परंतु .... अर्से के .... भी जब कृष्ण को द्वारपाल द्वारा .... आने की .... मिली, वे सिंहासन तथा लक्ष्मी को .... कर नंगे पैर .... और सुदामा को .... लगाया।

२१. अपने सच्चे मित्र की झूठी निंदा………को दण्ड देना चाहिए जब कि वह निराकरण कर देने पर भी न………। यदि अपना बस न……हो तो उस स्थान को उस……छोड़ देना… है।

२२. एक बार दृढ़ प्रतिज्ञा कर लेने के…… किसी की सौगन्द (शपथ) दिला देने पर अपने… …से हट जाना और प्रतिज्ञा को न… … …महान् मूर्खता और सब से बड़ा पाप है।

५—लिंग, वचन और कारक

निम्न लिखित शब्दों को ध्यान से पढ़िए और उनका अन्तर समझिए—

१. चाचा-चाची २. दादा-दादी ३. देव-देवी

इन शब्दों पर विचार करने से पता लगता है कि कुछ शब्दों में अंत में ई जोड़ देने से स्त्री लिंग बनजाता है।

इसी प्रकार निम्न लिखित शब्दों को भी ध्यान से देखिए—

बाबू – बबुआइन
पंडित – पंडितानी
नट – नटनी
सेठ – सेठानी
अधिकारी – अधिकारिनी
बेटा – बिटिया
माली – मालिन

माली शब्द के साथ 'इन' जोड़ने से; 'पंडित' शब्द के साथ 'आनी' जोड़ने से; 'बाबू' शब्द के साथ 'आइन' जोड़ने से; 'सेठ' शब्द के साथ 'पंडित' शब्द की भाँति 'आनी' जोड़ने से; 'नट' शब्द के साथ 'नी' जोड़ने से; 'अधिकारी' शब्द के अंत में 'इनी' लगाने से और 'बेटा' शब्द के साथ अंत के 'आ' का लोप करके 'इया' लगाने से स्त्री लिंग शब्द बन गए हैं।

कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनके स्त्री लिंग शब्द उनसे विभिन्न होते हैं, जैसे—
मैंढा – भेड़

पुस्तकालय 6289

बैल – गाय
राजा – रानी
पिता – माता
विद्वान – विदुषी

जिस प्रकार पुल्लिंग के स्त्री लिंग बनाने के कुछ नियम हैं और कुछ पुल्लिंग शब्दों के स्त्री लिंग शब्द उनसे बिभिन्न होते हैं इसी प्रकार एक वचन से बहु वचन बनाते समय भी कुछ नियमों का ध्यान रखना पड़ता है। अभ्यास से ये सब अपने आप ठीक बन-जाते हैं और नियमों के रहने की आवश्यकता नहीं रहती।

निम्न लिखित शब्दों को ध्यान से पढ़िए—

(१) लड़का-लड़के (२) थाली-थालियाँ (३) लोग-लोगों
कपड़ा-कपड़े   बाली-बालियाँ   फौज-फौजों

नम्बर १ के शब्दों में अंत में 'ए' कर देने से; नम्बर दो के शब्दों में 'याँ' जोड़ देने से और नं० ३ के शब्दों में 'ओं' लगादेने से इन शब्दों के बहुवचन शब्द बनगये।

निम्न लिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए—

१. शीतला प्रसाद ने इस पुस्तक को लिखने में बड़ीमदद दी।
२. उसके फाउन्टेन पैन से यह लिखी गई है।
३. उसके पढ़ाने के लिए ही इस कार्य का श्रीगणेश हुआ था।
४. उसका एक पैन पहले जेब से गिर गया था।
५. इस विद्यार्थी के सम्बंधी उसकी ईश्वर दत्त प्रतिभा को नहीं पहचानते। यह उसका दुर्भाग्य है।
६. उसकी टेबिल पर, सुन्दर पैड में बँधे हुए, उसके लिखे निबंध सुरक्षित हैं।
७. हे बेटा ! तुम शीघ्र आकर अपनी अधूरी कविताओं और

अपनी अपूर्ण लेखमाला को पूरा करो।

इन वाक्यों में रेखांकित शब्द वाक्य में अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध बताते हैं। ऐसे सम्बन्ध बताने वाले संज्ञादि शब्दों के रूपों को कारक कहते हैं। इनका ब्योरा निम्न प्रकार है। कारक आठ हैं—

कारक—	विभक्तियाँ (चिन्ह)	प्रयोग
कर्ता—	ने	शीतला प्रसाद ने
कर्म—	को	पुस्तक को
करण—	से (द्वारा)	फाउन्टेन पैन से
सम्प्रदान—	के लिए	पढ़ाने के लिए
अपादान—	से (पृथक होना)	जेब से
सम्बन्ध—	का, की, के इत्यादि	विद्यार्थी के
अधिकरण—	में, पे, पर	टेबिल पर
सम्बोधन—	हे, हा, रे, ओ,	हे बेटा!

अभ्यास के लिए प्रश्न

१. निम्न लिखित शब्दों के विपरीत लिंग और वचन लिखिए—
मैंस, भेड़, चूहा, पुस्तक, कलम, बाबू छात्र, अध्यापक, बालक, वीर।

२. कारक कितने प्रकार के हैं? प्रत्येक को दो दो उदाहरण देकर समझाइए।

३. निम्न वाक्यों में संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के लिंग वचन और कारक बताइए—

१. उसने सच्ची मित्रता का अनूठा उदाहरण पेश किया।

२. राम ने अपने मित्र के लिए अनेक कष्ट सहे।

क्रिया के वाच्य

निम्न लिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए

१. राम हारमोनियम बजाता है।
२. राम के द्वारा हारमोनियम बजाया जाता है।
३. वह वालीबाल भी अच्छी खेलता है।
४. उसके द्वारा वालीबाल भी अच्छी खेली जाती है।
५. मैं कोई अच्छी वस्तु नहीं खाता हूँ।
६. मुझ से कोई अच्छी वस्तु नहीं खायी जाती है।

पहले और दूसरे वाक्य पर ध्यान देने से स्पष्ट प्रगट होता है कि पहले में राम को प्रधानता है। राम कर्ता कारक है। उस वाक्य की क्रिया 'बजाता है' है। इस क्रिया का मुख्य उद्देश्य भी इसका कर्ता ही है। इसलिए ऐसे वाक्य को कर्तृवाच्य का वाक्य कहेंगे। दूसरे वाक्य में क्रिया 'बजाया जाता है' का मुख्य उद्देश्य 'हारमोनियम' है न कि 'राम'। यहाँ क्रिया का कर्म 'हारमोनियम' मुख्य उद्देश्य के रूप में आया है, अतः यह वाक्य कर्मवाच्य का वाक्य है।

इसी प्रकार न० ३. का वाक्य कर्तृवाच्य का है और न० ४. का कर्मवाच्य का। ठीक इसी तरह न० ५ कर्तृवाच्य का है और न० ६ कर्मवाच्य का।

इन दोनों भेदों के अतिरिक्त वाक्य का एक भेद और है। जब वाक्य में अकर्मक क्रिया का प्रयोग कर्मवाच्य की तरह होता

है तब वह **भाववाच्य** कहलाता **है**। निम्न लिखित वाक्य को ध्यान से पढ़िए—

१. मैं रोता हूँ (कर्तृवाच्य)
२. मुझ से रोया जाता है। (भाववाच्य)

'रोना' क्रिया अकर्मक है अतः नं० २ के वाक्य में क्रिया भाव वाच्य की क्रिया कही जायगी। अकर्मक क्रिया कर्म न होने से केवल भाव ही का अर्थ प्रकाशित करती है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

१. निम्न लिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए—

   १. उसने वार्षिकोत्सव पर दो सुन्दर गीत गाए।
   २. विद्यार्थियों ने गत वर्ष दो नाटक खेले थे।
   ३. रामने अपने अनूठे अभिनय के फल स्वरूप कई पदक प्राप्त किए।
   ४. सरकार अच्छे खिलाड़ियों को प्रति वर्ष इनाम देती है।
   ५. उसने वालीबाल, बैडमिंटन और कैरम बोर्ड के खेलों में ख्याति प्राप्त की है।

२. निम्नलिखित वाक्यों को भाव वाच्य में बदलिए—

   १. वह रोता है।
   २. वह भीतर ही भीतर घुटता है।
   ३. राम नहीं हँसता।
   ४. वह कैसे रहेगा ?

३. निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य बदलिए और लिखिए कि आपने किस वाच्य से कौनसा वाच्य बनाया है—

१. उसने बहुत जल्द कविता करना सीख लिया था।
२. कुण्डलियाँ उसके द्वारा बड़ी सुन्दर बनाई जाती हैं।
३. वह साइकिल पर बैठ कर नित्य सड़क की सैर करता था।
४. उसके द्वारा साइकिल पर एक सुन्दर कविता भी लिखी गई थी।
५. वह और उसका मित्र एक से कपड़े पहना करते थे।

७—विरामादि चिह्नों का प्रयोग

निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए—

तीतर मोर कबूतर तोता बाज आदि पक्षी अपनी अपनी खूराक की तलाश में दिन भर इधर उधर फिरते हैं तीतर खेतों में अनाज खाता है तीतर और मोर दोनों ही कीड़े मकोड़े भी खाते हैं परंतु कबूतर और तोता मांसाहारी नहीं हैं बाज दूसरी चिड़ियों का शिकार करता है

'तीतर मोर कबूतर तोता बाज' का एक साथ लिखा होना कुछ अखरता है। चूँकि ये सब पृथक पृथक पक्षियों के नाम हैं अतः इनको पढ़ते समय प्रत्येक के बाद थोड़ा सा ठहरना उचित है। बोलते समय या लिखते समय जहाँ कुछ ठहरने की आवश्यकता होती है या जहाँ एक तरह के कई शब्दों का एक साथ प्रयोग होता है वहाँ **अल्प विराम** समझना चाहिये। 'और' जहाँ नहीं आता वहाँ अल्प विराम आ जाता है। जिन शब्दों में बहुत साम्य है उन के बीच '—' **योजक चिन्ह** लगाते हैं ऊपर की पंक्तियों में कई स्थानों पर एक वाक्य पूरा होगया है परंतु उनके बीच में उन को पृथक करने के लिए कोई चिन्ह नहीं है। जहाँ एक वाक्य पूरा होजाय वहाँ **पूर्ण विराम** लगाना चाहिये। अब इन पंक्तियों को ठीक कर के लिखते हैं —

तीतर, मोर, कबूतर, तोता, बाज आदि पक्षी अपनी अपनी खूराक की तलाश में दिनभर इधर उधर फिरते हैं। तीतर खेतों में अनाज खाता है। तीतर और मोर दोनों ही कीड़े मकोड़े भी खाते हैं परंतु कबूतर और तोता मांसाहारी नहीं हैं। बाज दूसरी

चिड़ियों का शिकार करता है।

निम्नलिखित वाक्य को ध्यान से पढ़िये—

१. वह कहाँ चला गया ?
२. उसका पत्र क्यों नहीं आया ?
३. क्या अब भी वह कैद ही रहेगा ?

ऊपर लिखे तीन वाक्यों में कोई बात पूछी गई है। ये सब प्रश्न वाचक हैं। ऐसे वाक्यों के आगे '?' चिन्ह लगाया जाता है। इसे **प्रश्न वाचक** चिह्न कहते हैं। नीचे लिखे वाक्यों को भी ध्यान से पढ़िये—

१. वेद चार हैं : ऋग, साम, यजु और अथर्व।
२. हे राम ! अब तो दया करो।
३. राम तो राम ही है; उसके समान दूसरा कोई मुझे प्रिय नहीं हो सकता।
४. कीट-कीटाणु, पशु-पक्षी, नदी-पर्वत, पेड़-पौधे सभी में भगवान का स्वरूप विद्यमान है।
५. "जाको जा पर सत्य सनेहू।
   सो तेहि मिलत, न कछु सन्देहू" ॥
   ऐसा कथन तुलसीदासजी का है।
६. उसको ऐसी चीजें प्रिय थीं, जैसे :—
   चिलगोजे (लौंजे), नरम जलेबी, बादाम का हलुआ इत्यादि।

वाक्य नं० १ में 'हैं' शब्द के बाद ':' चिह्न है। जब उदाहरण देने की आवश्यकता होती है या एक कथन की पुष्टि में कुछ विशेष कहना होता है तब ऐसा चिह्न लगाते हैं। इसका नाम **अपूर्ण विराम** है।

वाक्य नं० २ में 'राम' शब्द के आगे '!' ऐसा चिह्न है। हृदय के उद्‌गार जब प्रगट करते हैं तब ऐसा चिह्न लगाते हैं अतः इसका नाम **उद्‌गार चिह्न** है।

वाक्य नं० ३ में 'राम ही है' के बाद ; चिह्न है। इसे अल्प विराम से दुगुने ठहराव पर लगाया जाता है। बहुत से लोग इसके स्थान पर अल्प विराम का ही प्रयोग करते हैं। इसका नाम **अर्द्ध विराम** है।

वाक्य नं० ४ में कीट-कीटाणु तथा अन्य एकसे शब्दों के बीच छोटी सी रेखा है। इसे **योजक चिह्न या विभाजक चिह्न** कहते हैं।

वाक्य नं० ५ में तुलसीदासजी का कथन " " चिह्नों के बीच में है। जब हम किसी की कही या लिखी हुई बात को ज्यों का त्यों लिखते हैं तब उसे ऐसे चिह्नों के बीच में रखते हैं। इस चिह्न का नाम **उद्धरण चिह्न** है।

जब किसी बात को उदाहरण देकर समझाना चाहते हैं तब '—' चिह्न लगाकर लिखते हैं। जैसे वाक्य नं० ६ में है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

(१) निम्न लिखित अवतरणों को ध्यान से पढ़िये और आवश्यक चिह्न लगाकर उन्हें अपनी कापी में लिखिए—

(क) "इतने में देखा कि बादल उमड़ रहे हैं चीलें नीचे उतर रही हैं तबियत भुरभुरा उठी। इधर घटा बहार में बहार इतने में वायु का वेग बढ़ा चीलें अदृश्य हुईं अंधेरा छाया बूंदें गिरने लगीं। साथ ही तड़ तड़ धड़ धड़ होने लगा

देखो ओले गिर रहे हैं। ओले थमे कुछ वर्षा हुई। बूटी तैयार हुई बम भोला कह शर्माजी ने एक लोटा भर चढ़ाई।

(ख) "चिंता स्रोत दूसरी ओर फिरा विचार आया कि काल अनन्त है। जो बात इस समय है वह सदा नहीं रहेगी इससे एक समय अच्छा भी आ सकता है। जो बात आज आठ आठ आँसू रुलाती है वह किसी दिन बड़ा आनंद उत्पन्न कर सकती है।

(ग) "कुछ दिन पीछे इन्हें उर्दू लिखने का शौक़ हुआ उर्दू भी 'ऐसी वैसी नहीं उर्दू ए मुअल्ला। इसी शौक के कुछ आगे पीछे इन्हों ने राजा शिवप्रसाद का जीवन चरित्र लिखा जो सरस्वती के आरंभ के तीन अंकों में निकला उर्दू ज़बान और शेर सखुन की बेढंगी नकल से जो अस्ल से कभी कभी साफ़ अलग हो जाती है उनके बहुतसे उपन्यासों का साहित्यिक गौरव घट गया।"

(घ) "यदि कोई पूछे कि जनता के हृदय पर सब से अधिक विस्तृत अधिकार रखनेवाला हिंदी का सब से बड़ा कवि कौन है तो उसका एक मात्र यही उत्तर ठीक हो सकता है कि भारत हृदय भारती कंठ भक्त चूड़ामणि गोस्वामी तुलसीदास।"

८ — अशुद्धियों का संशोधन

भाषा में अशुद्धियों का रहना ऐसा ही है जैसे अच्छे घी शक्कर से बने हुए हलुए में किरकिर। हमने कितना ही घी शक्कर डाला हो और अच्छी से अच्छी शक्कर डाली हो परंतु सूजी या आटे में किरकिर रही तो सब कुछ बेकार है। अशुद्धियाँ केवल हिज्जे गलत लिख देने पर ही नहीं होतीं, और भी कई प्रकार से हो जाया करती हैं। यदि शब्दों का यथा स्थान प्रयोग नहीं किया गया है तो वाक्य बहुत भद्दा लगेगा। यदि उपयुक्त शब्द काम में नहीं लाए गए हैं तो भी हम उस वाक्य को सुन्दर वाक्य नहीं कह सकते। इन बातों के अतिरिक्त यदि परिपाटी के अनुसार शब्द नहीं लिए गए हैं तो भी हमारा लेख युक्ति संगत नहीं समझा जायगा।

आजकल हाई स्कूल परीक्षा पास कर लेने के बाद भी कई सज्जन लिखने में ऐसी अशुद्धियाँ करते हैं कि जिन्हें देखकर दुःख होता है। इसका मूल कारण हमारी दोषपूर्ण पाठन प्रणाली ही है। अधिकांश अध्यापकगण केवल पाठ्य पुस्तकें समाप्त करवा देना ही अपना कर्तव्य समझते हैं और लिखाई के काम की ओर बहुत ही कम ध्यान दिया जाता है। जो थोड़ासा कार्य होता है उसका भी संशोधन ठीक तौर से नहीं किया जाता। पूरे वर्ष भर में पाँच चार पत्र और इतनेसे ही निबन्ध लिखवा देने से क्या हो? और फिर उनका भी भली प्रकार संशोधन न हो तो कैसे विद्यार्थियों को लिखना आवे। निम्न लिखित बातों से स्पष्ट प्रकट होगा कि विद्यार्थी कितने प्रकार से अशुद्धियाँ प्रायः किया करते हैं—

(क) शब्दों का यथा स्थान प्रयोगः—

प्रायः ऐसा देखा गया है कि कई वर्षों तक हिंदी लिख पढ़ लेने के बाद भी बहुत से लोग लिखने में व्याकरण की अशुद्धिय करते हैं। उनके लिखे हुए वाक्य भली प्रकार नहीं जुड़ते। नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िये :—

१. लड़का गोविंद का सातवें दर्जे में पढ़ता है।
२. किताब उसकी वह मैंने उसी दिन देदी थी।
३. यहाँ ओफ़ ! कितनी गरमी है।
४. क्रिकेट है खेलता राम।
५. उसका छोटा भाई है मेरा परम मित्र।

प्रथम वाक्य में 'लड़का गोविंद का' कहना इतना अच्छा नहीं मालूम होता जितना यह कहना कि 'गोविंद का लड़का'। 'पुस्तक मेरी' कहना इतना अच्छा नहीं मालूम होता जितना 'मेरी पुस्तक'। सम्बन्ध के शब्दों का प्रयोग पहले अच्छा लगता है। दूसरे वाक्य में 'किताब उसकी वह' बड़ा भद्दा प्रयोग है। 'वह' और 'उसकी' सम्बन्ध के शब्द हैं जो 'किताब' से पहले अच्छे लगेंगे। 'उसकी वह किताब मैंने उसी दिन देदी थी' लिखेंगे वा कहेंगे तो ठीक मालूम होगा।

तीसरे वाक्य में 'ओफ़' शब्द घबराहट प्रकट करता है। 'यहाँ ओफ़' कहने से सारी लज्जत ही जाती रही। कितना भद्दा प्रयोग है। ऐसे शब्द वाक्य में सबसे प्रथम रक्खे जाने चाहिये। 'ओफ़ ! यहाँ कितनी गरमी है' कहना बड़ा अच्छा मालूम होता है।

चौथे वाक्य में क्रिया 'है' का प्रयोग बड़ा भद्दा लगता है। प्रायः क्रिया अंत में ही अच्छी लगती है। 'राम क्रिकेट खेलता है' होना चाहिये। इसी प्रकार पाँचवें वाक्य में 'उस का छोटा भाई

मेरा परम मित्र है' ठीक मालूम होगा।

(ख) उपयुक्त शब्दों का प्रयोगः—

शब्दों के यथा स्थान प्रयोग की बात ऊपर समझा दी गई। अब हमें यह देखना है कि यथा स्थान प्रयोग करने के बाद भी कोई कमी खटक सकती है क्या। नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए—

१. श्री सुशील कुमारी श्री एन. एल. माथुर की पत्नी हैं।
२. मीरा बाई बहुत अच्छी कवि थीं।
३. गाय बोल रही है।
४. झंडा उड़ाया जा रहा है।
५. चील घूम रही है।

प्रथम वाक्य में 'श्री सुशील कुमारी' कहना अच्छा नहीं मालूम होता। विवाहित स्त्रियों के लिए 'श्रीमती' शब्द काम में लाया जाता है। 'श्रीमती सुशील कुमारी' कहेंगे तब ठीक मालूम होगा। शब्द तो सभी यथा स्थान हैं परंतु 'श्री' शब्द उपयुक्त नहीं है। यह ध्यान रखना चाहिए कि वाक्य लिखते या बोलते समय हम उपयुक्त शब्द का प्रयोग हैं या नहीं। दूसरे वाक्य में 'मीरा बाई' के लिए 'कवि' शब्द का प्रयोग ठीक नहीं मालूम होता। स्त्रियों के लिए 'कवयित्री' शब्द काम में लाया जाना चाहिये। इसी प्रकार तीसरे वाक्य में गाय के लिए 'बोल रही है' शब्द ठीक नहीं है। गायों की बोली के लिए 'रंभाना' शब्द उपयुक्त है अतः 'गाय रंभा रही है' कहेंगे। इसी प्रकार 'सिंह बोल रहा है' न कहकर 'सिंह दहाड़ रहा है' कहना सुन्दर मालूम होगा। चौथे वाक्य में 'झंडा' के साथ 'उड़ाया जा रहा है' कहना बिलकुल भद्दा प्रयोग है। 'झंडा फहराया जा रहा है' कहना उचित है। चीलों के लिए 'घूमना'

शब्द अच्छा नहीं लगता है अतः पाँचवें वाक्य में 'चोल मँडरा रही हैं' कहेंगे। वाक्य लिखते या बोलते समय उपयुक्त शब्दों का प्रयोग बहुत आवश्यक है।

परिपाटी के अनुसार प्रयोग— यथा स्थान प्रयोग तथा उपयुक्त शब्दों के प्रयोग के अतिरिक्त कुछ अन्य बातें और हैं जिनका ध्यान न रखने से भी वाक्य भद्दे मालूम होते हैं। नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए—

१. श्री बलदेव सिंह रक्षा मंत्री हैं।
२. पण्डित प्रेमचंद उच्च कोटि के उपन्यास लेखक थे।
३. बाबू जवाहरलाल नेहरू हमारे प्रधान मंत्री हैं।
४. श्री गांधीजी की गणना संसार के महापुरुषों में की जाती है।
५. श्री ग्रियर्सन ने अंग्रेज होते हुए भी हिंदी की अच्छी सेवा की।

सिक्खों के लिए 'सरदार' शब्द का प्रयोग करने की परिपाटी है अतः प्रथम वाक्य में 'बलदेवसिंह' शब्द के साथ 'श्री' न लगाकर 'सरदार बलदेवसिंह' कहना ठीक होगा। कायस्थों के लिए 'मुन्शी' शब्द का प्रयोग किया जाता है अतः 'पण्डित प्रेमचन्द' कहना अच्छा नहीं मालूम होता, 'मुन्शी प्रेमचन्द' कहना चाहिये। तीसरे वाक्य में 'बाबू जवाहरलाल' कहना अच्छा नहीं मालूम होता। ब्राह्मणों के साथ आदर सूचक शब्द 'पण्डित' अच्छा लगता है। गांधीजी जैसे महापुरुषों के लिए 'श्री' शब्द परिपाटी के विरुद्ध जान पड़ता है अतः 'महात्मा' शब्द का प्रयोग करना ही सुन्दर प्रतीत होगा। पांचवें वाक्य में 'ग्रियर्सन' के साथ 'श्री' शब्द का

प्रयोग भद्दा मालुम होता है। अंग्रेज लोग 'मिस्टर' कहना पसंद करते हैं अतः मिस्टर ग्रियर्सन' कहना चाहिये।

(ग) शुद्ध शब्दों का प्रयोगः—प्रायः विद्यार्थी कुछ खास शब्दों के लिखने में बहुत अशुद्धियाँ करते हैं। नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िये।

१. पन्नालाल रामशरण से ईर्षा रखता है।
२. उसका मकान बड़ा गंधा है।
३. वह पोचू है अतः बालिग होते हुए भी दूसरों के आधीन है।
४. पूज्यनीय गांधीजी ने हमें स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाया।
५. वोह व्याकरण अच्छी जानता है।

प्रथम वाक्य में 'ईर्षा' शब्द अशुद्ध लिखा हुआ है। इसका शुद्ध रूप 'ईर्ष्या' है। दूसरे वाक्य में 'गंधा' शब्द अशुद्ध है। इसका शुद्ध रूप 'गंदा' है। इसी प्रकार तीसरे वाक्य में 'आधीन' शब्द अशुद्ध है। इसका शुद्ध रूप 'अधीन' है। 'पूज्यनीय' शब्द के शुद्ध रूप 'पूजनीय' और 'पूज्य' हैं। 'वोह' शब्द बिलकुल अशुद्ध है। 'वह' होना चाहिये। इसका बहुवचन 'वे' है। लिखते या बोलते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि हम शुद्ध लिख या बोल रहे हैं या नहीं।

(ङ) विभक्तियाँ, वचन इत्यादि के अनुसार प्रयोग—

बहुत से लोग हिंदी बोलने या लिखने में एकवचन और बहुवचन का ध्यान नहीं रखने, स्त्रीलिंग और पुल्लिंग में विशेष भेद नहीं करते और कुछ शब्दों के साथ विभक्तियाँ (ने, को, से, में, के, पर की, के लिए आदि) ठीक से नहीं लगाते। नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए—

१. राम रोटी खाली है।

२. मैं उसको गाली नहीं दी।
३. मैंने वहां गया था।
४. वह लोग उसे साँगानेर ले गये।
५. उसने मुझे कई पुस्तक दी है।

प्रथम वाक्य 'राम रोटी खाली है' में 'राम रोटी' के बीच में कुछ और होना चाहिये। केवल 'राम रोटी' कहने से ऐसा अर्थ भी हो सकता है कि 'राम रोटी' किसी किस्म की रोटी का नाम है, जैसे डबल रोटी, मिस्सी रोटी इत्यादि। यदि 'राम' शब्द का प्रयोग रोटी खाने वाले व्यक्ति के लिए हुआ है तो जब तक इसके साथ 'ने' न लगायें तब तक अर्थ स्पष्ट नहीं होता। अतः 'राम ने रोटी खाली है' लिखना चाहिये। इसी प्रकार दूसरे वाक्य में 'मैंने उसको गाली नहीं दी' लिखना ठीक है। तीसरे वाक्य 'मैंने वहां गया था' में 'मैंने' शब्द का प्रयोग भद्दा लगता है। यहाँ विभक्ति की आवश्यकता नहीं है अतः 'मैं वहां गया था' लिखना अच्छा लगेगा। चौथे वाक्य में 'लोग' शब्द बहुवचन है और 'वह' शब्द जो इसका विशेषण है एकवचन है अतः 'वे लोग' लिखना ठीक होगा। इसी प्रकार पाँचवें वाक्य में 'कई' शब्द यह बताता है कि पुस्तकों की संख्या एक से अधिक है अतः 'पुस्तकें' लिखना शुद्ध होगा। इसी वाक्य में 'है' क्रिया एकवचन है यह भी अशुद्धि है। 'कई पुस्तकें' के साथ 'दी हैं' क्रिया ठीक मालूम होगी।

(ब) अब कुछ ऐसे शब्दों का संक्षिप्त ब्योरा नीचे दिया जाता है जिनका व्यवहार रात दिन हिन्दी बोलने लिखने में हम लोग करते हैं और जिनके सम्बन्ध में प्रायः भूलें हो जाया करती हैं—

शुद्धाशुद्ध शब्द

नीचे लिखे शब्दों के लिखने में छात्र प्रायः अशुद्धियाँ करते हैं—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अत्योक्ति	अत्युक्ति	पूज्यनीय	पूजनीय,पूज्य
आवश्यकीय	आवश्यक	प्रनाम	प्रणाम
आधीन	अधीन	प्रगट	प्रकट
ईर्षा	ईर्ष्या	प्रथक	पृथक
उतर	उत्तर	पैत्रिक	पैतृक
उपरोक्त	उपर्युक्त	ब्रज	व्रज
ऐक्यता	एकता	बनिता	वनिता
कहा के	कहा कि	मूरख	मूर्ख
क्यों के	क्योंकि	मनहर	मनोहर
कोतुहल	कौतूहल	ये (एक वचन)	यह
कवी	कवि	रिषी	ऋषि
गंधा	गंदा	वोह	वह
गुरू	गुरु	विध्या	विद्या
गुन	गुण	व्यौहार	व्यवहार
ग्यान	ज्ञान	श्याम (सांयकाल)	शाम
धई	दही	शिर	सिर
धेय	ध्येय	सीस	शीश
धोका	धोखा	सरीर	शरीर
परिक्षा	परीक्षा	स्वयम्बर	स्वयंवर
परीश्रम	परिश्रम	सन्मुख	सम्मुख
पुन्य	पुण्य	हसना	हँसना

———

६—मुहावरे और लोकोक्तियाँ

भाषा को प्रभावशाली, चमत्कारपूर्ण तथा रोचक बनाने के लिए उसमें मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग बहुत ही आवश्यक है। मुहावरों की सहायता से जो भाव हम किसी पर प्रकट करना चाहते हैं, बड़े सुन्दर ढंग से प्रकट कर सकते हैं। मान लीजिए, किसी बूढ़े का एक मात्र आधार उसका इकलौता बेटा है। यदि हम यों कहें कि 'वह उसका एकमात्र आधार है' तो इतना संतोष नहीं प्राप्त होता जितना यह कहने में कि 'वह अपने बाप के लिए अंधे की लकड़ी के समान है'। यदि मुझसे कोई 'व्यक्ति बहुत ईर्ष्या या डाह रखता है तो 'वह मुझसे डाह रखता है' कहने में इतना संतोष नहीं होता। 'मुझे देखकर उसके कलेजे पर साँप लौटता है' कहने पर मेरे भावों का अधिक स्पष्टीकरण होता है और इन शब्दों में प्रभाव भी अधिक है। यह ध्यान रहे कि मुहावरों की अनावश्यक ठूँस ठाँस अच्छी नहीं लगती। जहाँ युक्ति संगत तथा चमत्कार पूर्ण महसूस हो उसी स्थान पर मुहावरे का प्रयोग होना चाहिये। स्व० श्री बालकृष्ण भट्ट तथा श्री प्रेमचंद मुहावरों के प्रयोग के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी प्रत्येक पंक्ति मुहावरों से खाली नहीं है परंतु प्रयोग इतना सुन्दर हुआ है कि पढ़ते पढ़ते तबियत फड़क उठती है।

वाक्यों में प्रयोगः— मुहावरों तथा लोकोक्तियों को जानना इतना महत्व पूर्ण नहीं है। जितना उनके प्रयोग करने में चतुर होना। किसी वाक्य में कोई मुहावरा आजाय—यह उद्देश्य नहीं होना चाहिये। प्रयोग इस प्रकार किया जाना चाहिये कि उसका अर्थ

स्पष्ट होजाय । मान लीजिये 'कान पर जूँ न रेंगना' एक मुहावरा है जिसका आपको किसी वाक्य में प्रयोग करना है । यदि आप केवल यह लिख देते हैं 'उसके कान पर जूँ नहीं रेंगती' तो इस मुहावरे का अर्थ स्पष्ट नहीं प्रकट हुआ । इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि उसके कान पर कोई ऐसा लेप लगा हुआ है अथवा उसके कान के चमड़े में कुछ ऐसी विशेषता है कि उक्त अंग (कान) के समीप जूँ नहीं आने पाती । इस मुहावरे का अर्थ है कि बार बार कहने पर भी वह नहीं मानता । इस अर्थ को व्यक्त करने के लिए यदि यों कहें 'अध्यापक ने बार बार मोहन को गणित में अधिक परिश्रम करने के लिए कहा था परंतु उसके कान पर जूँ न रेंगी' तो अच्छा मालूम होगा और अर्थ स्पष्ट झलक पड़ेगा ।

नीचे कुछ मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ हैं जिनका अर्थ लिख दिया गया है । विद्यार्थी उनका वाक्यों में प्रयोग करें—

मुहावरे

१. अंधे की लकड़ी = एक मात्र आधार
२. अंधे के हाथ बटेर लगना = अयोग्य व्यक्ति को अच्छी वस्तु मिलना
३. अँगूठा दिखाना = तिरस्कार करके इंकार करना
४. अपनी खिचड़ी अलग पकाना = सबसे अलग रहना
५. आसमान से गिरना = बिना परिश्रम मिलना
६. ईंट से ईंट बजाना = विध्वंस करना
७. आसमान पर चढ़ाना = अधिक तारीफ करना
८. आटे के साथ घुन पिसना = अपराधी के साथ निरपराधी को सजा मिलना

९. ईद का चाँद होना = चिरकाल बाद दर्शन देना
१०. उँगली पर नचाना = वश में करना
११. उधेड़ बुन में लगना = सोच विचार करना
१२. उलटी गंगा बहाना = विपरीत बात करना
१३. कफन सिर से बाँधना = मरने को तैयार होना
१४. कब्र में पैर लटकाना = मरने के करीब होना
१५. कलम तोड़ना = खूब बढ़िया लिखना
१६. कलेजे पर साँप लौटना = ईर्ष्या या दुःख से जलना
१७. कान पर जूँ न रेंगना = बार बार कहने पर भी न मानना
१८. कुत्ते की मौत मरना = बुरी तरह मरना
१९. किए कराए पर पानी फिरना = बना बनाया काम बिगड़ जाना
२०. कोल्हू का बैल = दिन रात काम करने वाला
२१. खटाई में पड़ना = झमेले में डालना
२२. खाक छानना = भटकना
२३. खून खुश्क होना = अत्यंत भयभीत होना
२४. खयाली पुलाव = मनमानी कल्पनाएँ
२५. गड़े मुर्दे उखाड़ना = पुरानी बात को फिर से ले बैठना
२६. गले मढ़ना = जबरदस्ती कुछ देना
२७. गिरगिट की तरह रंग बदलना = एक सिद्धांत पर स्थिर न रहना
२८. गुदड़ी का लाल = बुरे स्थान पर अच्छी चीज
२९. गुड़ गोबर कर देना = काम बिगाड़ देना
३०. घर फूँक कर तमाशा देखना = स्वयं की संपत्ति नष्ट करके मनोरंजन करना
३१. घाट घाट का पानी पीना = देश देशांतरों का अनुभव करना

३२. घाव हरा करना = भूले हुए दुःख को याद करना
३३. घी के दिए जलाना = सुख होना
३४. चंडू खाने की गप्प = झूठी बकवाद
३५. चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना = होते हुए काम को बिगाड़ना
३६. चाँदीका जूता मारना = रुपयों का लालच देना
३७. चादर से बाहर होना = हैसियत से ज्यादा काम करना
३८. चिड़िया फंसाना = किसी मालदार को दांव में लेना
३९. चौकड़ी भूल जाना = भौं चक्का हो जाना
४०. छप्पर फाड़ कर देना = बिना परिश्रम के खूब देना
४१. छठी का दूध याद आना = सब सुख भूल जाना
४२. छाती पर मूंग दलना = किसी के सामने उसका दिल दुखाना
४३. जबान पर लगाम न होना = उचित अनुचित बकना
४४. जहर का घूँट पीना = किसी अनुचित बात को सहना
४५. जान के लाले पड़ना = संकट में पड़ना
४६. जी खट्टा होना = प्रेम न रहना
४७. जूती चटकाना = खुशामद करना
४८. झक मारना = व्यर्थ समय गँवाना
४९. झाड़ू मारना = तिरस्कार कर देना
५०. झाड़ू फेरना = बिल्कुल बरबाद कर देना
५१. टेढ़ी खीर होना = कठिनाई पेश आना
५२. ठोकरें खाना = भूलें करना
५३. डोरी ढीली करना = देखभाल न करना
५४. ढाई दिन की बादशाहत = थोड़े समय का ऐश्वर्य
५५. तीन तेरह करना = तितर बितर करना
५६. तीन पाँच करना = हुज्जत करना
५७. थूँक कर चाटना = वचन देकर फिर जाना

५८. दाँत खट्टे करना = पराजित करना
५९. दाँत निकालना = व्यर्थ हँसना, (२) गिड़गिड़ाना
६०. दुम दबा कर भागना = डरकर भागना
६१. धुन सवार होना = किसी काम के पीछे पड़जाना
६२. धज्जियाँ उड़ाना = दुर्गति करना
६३. नाक भौं सिकोड़ना = घृणा प्रदर्शित करना
६४. नादिर शाही = अत्याचार
६५. नाकों चने चबाना = खूब तंग करना
६६. निन्नानवे के फेर में पड़ना = लालच में फंसना
६७. नीला पीला होना = गुस्से होना
६८. पतलून से बाहर होना = क्रोध में आना
६९. पहाड़ टूट पड़ना = घोर मुसीबत का आ जाना
७०. पाँचों अंगुलियाँ घी में = खूब लाभ होना
७१. फूल सूंघ कर रहना = बहुत कम खाना
७२. बट्टा लगाना = दाग लगाना, कलङ्क लगाना
७३. बाजार गर्म होना = काम जोरों पर होना
७४. भिड़के कुत्ते को छेड़ना = फसादी आदमी से छेड़ करना
७५. भूत सवार होना = किसी चीज के लिए धुन सवार हो जाना
७६. मजा किर किरा होना = रंग में भंग होना
७७. मिट्टी पलीद करना = दुर्दशा करना
७८. मुँह पर हवाई उड़ना = चेहरा फीका पड़ जाना
७९. रँगा सियार = धोखेबाज
८०. रोंगटे खड़े होना = बहुत भय लगना
८१. लहूके आँसू पीना = दुख सह लेना
८२. सब्ज बाग दिखाना = लोभ देना
८३. साँप छछुन्दर की दशा = भारी असमंजस

८४. हवा बांधना = दिल्लगी बनाना
८५. हाथ पाँव फूल जाना = भयभीत हो जाना

लोकोक्तियाँ

८६. अंडा सिखावे बच्चे को चीं चीं कराना—छोटा बड़ो को उपदेश करे
८७. अंधी पीसे कुत्ता खाय = धन का उपयोग दूसरा करे
८८. आम के आम गुठली के दाम = दुगना लाभ होना
८९. इक नागिन अरु पंख लगाई = स्वभाव से भयंकर हो और कारण वश भयंकर हो जाय
९०. उल्टे बाँस बरेली को—उल्टा काम करना
९१. ऊँट के मुँह में जीरा—बहुत खाने वाले को थोड़ी चीज
९२. एक मछली सारे तालाब को गंदा करे—एक की बुराई से सब कलंकित हो
९३. काजीजी दुबले क्यों शहर के दुख से—अपना सोच न कर गाँव का सोच क्यों करते हैं।
९४. खोदा पहाड़ निकली चुहिया—बहुत परिश्रम का थोड़ा फल
९५. गुड़ खाये गुलगुलों से परहेज—बनावटी परहेज करने पर
९६. घर की खांड किकिरी लागे चूहों का गुड मीठा—अपनी अच्छी चीज की भी इज्जत न की जाय
९७. चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता—बेशर्म पर असर नहीं
९८. जल में रहना मगर से बैर—जिसके आधीन हो उसी से बैर
९९. झोंपड़ी में रहे महलों के स्वप्न—हैसीयत से ज्यादा कल्पना करना
१००. डायन अपने बच्चों को नहीं खाती—अपने को कोई हानि

नहीं पहुँचाता

१०१. तकल्लुक में है तकलीफ़ सरासर—अधिक शिष्टाचार में कष्ट है

१०२. तीन पाव चून चौबारे रसोई—थोडी बात का अधिक आडम्बर

१०३. दमडी की बुढ़िया टका सर मुडाई—वस्तु की कीमत कम पुरस्कार अधिक

१०४. दिन ईद और रात शबरात—सदा आनंद होना

१०५. नंगी क्या नहायेगी क्या निचोडेगी—गरीब क्या देगा

१०६. न नो मन तेल होगा न राधा नाचेगी—ऐसी शर्त पर काम करना जो पूरी न हो सके

१०७. पंचों का कहना सिर माथे पर परनाला वहीं रहेगा—अपनी बात पर अडे रहना और दूसरों को प्रसन्न करने कोशीश करना

१०८. बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद—जो किसी वस्तु की विशेष कद्र न जानता हो

१०९. बाप ने मारी मेंडकी बेटा तीरन्दाज—बहुत शेखी हाँकने वाले के लिए

११०. भागते भूत की लँगोटी ही सही—सब कुछ जा रहा हो तो जो कुछ मिले वो ही अच्छा

१११. मछली के बच्चों को तैरना कौन सिखावे—ज्ञानी को कौन ज्ञान दे

११२. मौत और ग्राहक का क्या पता किस वक्त आजाय—जिस का कोई निश्चय समय न हो उसके लिए

११३. रोज कुआ खोदना रोज पानी पीना—रोज कमाना रोज खाना

११४. विनाश काले विपरीत बुद्धिः – विपत्ति के समय अक्ल भ्रष्ट हो जाना

११५. साँप मर जाय लाठी न टूटे – काम हो जाय और हानि न हो

११६. हथेली पर सरसों नहीं उगती – केवल कहने से काम नहीं चलता

अभ्यास के लिए प्रश्न

१. निम्न लिखित मुहावरों तथा लोकोक्तियों का भावार्थ समझ कर उनका अपने वाक्यों में ऐसा प्रयोग कीजिये कि अर्थ स्पष्ट झलक पड़े—

घी के दीये जलाना; नाकों चने चबाना; अबकी चूकी धार मारी; न नो मन तेल होगा न राधा नाचेगी; अशर्फियाँ लुटें और कोयलों पर मुहर; मुँह में पानी भर आना; धेले की बुढ़िया टका सिर मुँडाई; पंचों का हुक्म सिर माथे पनाला यहीं गिरेगा; नाच न जाने आँगन टेढ़ा; नौ दो ग्यारह होना; धोबी का कुत्ता घरका न घाटका; आँख के अंधे नाम नैनसुख।

२. कोई एक छोटी सी कहानी लिखिए जिसमें ऊपर लिखी कहावतोंमें से कोई सी पाँच सुन्दरतया प्रयुक्त हो जावें।

१०—संक्षिप्त वाक्य विश्लेषण

निम्न लिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए—

१. गोविन्द ने कहा कि वह जयपुर जावेगा।
२. ज्योंही मैं स्टेशन पहुँचा बड़े जोर से वर्षा हुई।
३. वह नवयुवक जो अमेरिकन कमीज पहने हुए है, मेरा मित्र है।
४. जैसे कि गाडी ने सीटी दी एक छोटी लड़की जिसने कभी एंजिन नहीं देखा था, भय से काँप उठी।
५. तुम जाओ और मेरी घडी ले आओ।

प्रत्येक वाक्य के अर्थ की ओर ध्यान देने से मालूम होता है कि वह दो अथवा अधिक छोटे वाक्यों के योग से बना है। उदा-हरणार्थ पहले वाक्य में 'गोविन्द ने कहा' और 'वह जयपुर जावेगा' दो छोटे वाक्य सम्मिलित हैं और 'कि' द्वारा मिलाए गये हैं।

इसी प्रकार दूसरे वाक्य में 'बड़े जोर की वर्षा हुई' और 'ज्यों ही मैं स्टेशन पहुँचा' दो छोटे वाक्य सम्मिलित हैं।

तीसरे वाक्य में 'वह नवयुवक मेरा मित्र है' और 'जो अमेरि-कन कमीज पहने है' दो छोटे वाक्य मिले हुए हैं। चौथे वाक्य में तीन छोटे वाक्य सम्मिलित हैं —'एक छोटी लड़की भयसे काँप उठी', 'जिसने कभी एंजिन नहीं देखा था' और 'जैसे कि गाडी ने सीटी दी'। पाँचवे वाक्य में और द्वारा दो छोटे वाक्य मिलाए गए हैं।

जिन वाक्यों में केवल एकही उद्देश्य तथा तथा एकही विधेय (मुख्य क्रिया) हो उन्हें साधारण वाक्य कहते हैं। ऊपर लिखे

पाँचों वाक्य साधारण वाक्य नहीं हैं क्योंकि इनमें से चौथे को छोड़कर प्रत्येक में दो दो प्रमुख क्रियाएँ हैं। चौथे में तीन हैं।

जिनमें एक से समान कोटि के दो या उससे अधिक वाक्य होते हैं उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।

जैसे वाक्य नं० ४ संयुक्त वाक्य है। जिन वाक्यों में प्रधान और दूसरे अधीन उप वाक्यों का मेल होता है वह मिश्र वाक्य कहे जाते हैं।

प्रत्येक पूरे वाक्य के टुकड़ों पर ध्यान देने से यह ज्ञात होता है कि इन में कुछ तो प्रधान हैं और शेष उनके आश्रित हैं। पहले वाक्य में 'गोविन्द ने कहा' प्रधान खंड है और (क्या कहा ?) 'वह जयपुर जावेगा' आश्रित खंड है। दूसरे में 'बड़े जोर की वर्षा हुई' प्रधान खंड है 'ज्योंही मैं स्टेशन पहुँचा' आश्रित खंड। इसी प्रकार तीसरे वाक्य में 'वह नवयुवक मेरा मित्र है' प्रधान खंड है और 'जो अमेरिकन कमीज पहने हुए है' आश्रित खंड। चौथे वाक्य में 'एक छोटी लड़की भय से काँप उठी' प्रधान खंड है और शेष दोनों खंड 'जिसने कभी एंजिन नहीं देखा था' और 'जैसे कि गाड़ी ने सीटी दी' आश्रित खंड हैं। प्रत्येक खंड को उप वाक्य कहते हैं। एक प्रधान उप वाक्य प्रत्येक संयुक्त और मिश्र वाक्य में होता है, शेष उप वाक्य आश्रित उप वाक्य होते हैं। पाँचवाँ वाक्य संयुक्त वाक्य है क्योंकि इसमें दो समान कोटि के वाक्यों का मेल है। शेष वाक्य मिश्र वाक्य हैं॥

साधारण वाक्य के यदि हम खंड करें तो केवल दो खंड होंगे। उसके कर्त्ता कारक एक और उसके साथ के शब्द दूसरी ओर। व्याकरण में हम इन दोनों खंडों को 'उद्देश्य' तथा 'विधेय'

नाम से पुकारते हैं।

संयुक्त तथा मिश्र वाक्यों के अब हम खंड करना चाहते हैं तो यह जानना भी चाहते हैं कि एक खंड का दूसरे से क्या सम्बन्ध है। पहले वाक्य में 'गोविन्द ने कहा' प्रधान उप वाक्य है और 'वह जयपुर जायगी' आश्रित उप वाक्य। गोविन्द ने क्या कहा? ऐसे प्रश्न के उत्तर में यही कहेंगे कि 'वह जयपुर जावेगा'। ऐसे सब उप वाक्य जिन प्रयोग संज्ञा की भाँति हो और जो 'कि' द्वारा मिलाए जाँय संज्ञा उप वाक्य कहे जाते हैं। दूसरे वाक्य में ज्योंही मैं स्टेशन पहुँचा' उप वाक्य प्रधान उप वाक्य की क्रिया की

विशेषता बतलाता है अतः क्रिया विशेषण उप वाक्य है।

तीसरे वाक्य में 'जो अमेरिकन कमीज पहने हुए है' उप वाक्य प्रधान उप वाक्य का विशेषण सा प्रतीत होता है अतः।

विशेषण उप वाक्य है। चौथे वाक्य में जैसे कि गाड़ी ने सीटी दी' क्रिया की विशेषता बतलाता है क्यों कि यह काँप उठने का समय और कारण बताता है अतः क्रियाविशेषण उप वाक्य है। 'जिसने कभी इंजिन नहीं देखा था' प्रधान उपवाक्य का विशेषण है अतः विशेषण उप वाक्य है। पाँचवें वाक्य में दोनों उप वाक्य समान कोटि के हैं अतः 'तुम जाओ' प्रधान वाक्य है और 'मेरी घड़ी ले जाओ' स्वतन्त्र उप वाक्य है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

१. निम्नलिखित वाक्यों में उद्देश्य तथा विधेय बताइए—

१. राम पुस्तक पढ़ता है।
२. वह नित्य टहलने जाता है।
३. रमेश जयपुर गया है।

४. उसका भाई आज आ गया है।
५. सीता एक पत्र लिख रही है।

२. निम्नलिखित वाक्यों का संक्षिप्त वाक्य विग्रह कीजिए—
१. यह वही मनुष्य है जिसको मैंने मेले में देखा था।
२. तुम जयपुर जाओ और अपनी पुस्तकें ले आओ।
३. एक वृद्ध पुरुष जो कई दिन से ज्वर से पीड़ित था आज मर गया।
४. ज्यों ही वर्षा आई वे किसान जिन्होंने पहलेसे भूमि साफ कर रक्खी थी, हल लेकर बीज बोने चल पड़े।
५. राम जिसने रात दिन परिश्रम किया था, वार्षिक परीक्षा में भी सर्व प्रथम रहा है और पिछली त्रैमासिक परीक्षाओं में भी रहा था।
६. यह घड़ी ठीक समय नहीं देती क्योंकि इसका मालिक इसे छोड़ गया और यह उपेक्षा से रक्खी जाती है।
७. उसकी साइकिल जिससे वह बहुत प्यार करता था अब बेकार पड़ी है और दो दो इंच मिट्टी उस पर जमा हो रही है।
८. वह हारमोनियम जिसे वह नित्य बजाता था अब निरादृत होकर संदूक में पड़ा है और उसे कोई नहीं छूता।
९. राम ने कहा कि अवसर आने पर वह अपनी प्रतिज्ञा ज़रूर पूरी करेगा।

३. प्रत्येक उप वाक्य को दो दो उदाहरण देकर समझाइए।

दूसरा अध्याय

व्यावहारिक पत्र-रचना

व्यावहारिक व्याकरण

द्वितीय अध्याय

२—पत्र रचना

(१) पत्र रचना सम्बन्धी आवश्यक बातें।

जब हम उन मनुष्यों पर जो हमारे सामने उपस्थित नहीं है अपने मन के भाव प्रगट करना चाहते हैं, तब हम उन्हें पत्र लिखते हैं। पत्र के पंच अंग होते हैं। १. ऊपर दाहिनी ओर, जहाँ से पत्र भेजा जाता है, उस स्थान का नाम तथा पता लिखते हैं और उसके नीचे तारीख लिख देते हैं। जैसे—

नाहरगढ़ रोड़
जयपुर
२—६—४१

२. पत्र के बाँई ओर जो यथा योग्य शब्द लिखे जाते हैं उनका नाम सम्बोधन है। इनका ब्योरा इस प्रकार है—

(क) बड़े सम्बन्धियों को—पूज्य पाद, पूज्य पूज्या, मान्यवर, श्रद्धेय इत्यादि।

(ख) मित्र व बराबर वालों को— आयुष्मन्, चिरंजीव प्रिय आदि।

(ग) छोटे सम्बन्धियों को— आयुष्मन्, चिरंजीव, प्रिय आदि।

(घ) परिचित व अपरिचित लोगों को— प्रिय महाशय,

महोदय, श्रीमान् , प्रिय बन्धु, प्रिय महोदय, इत्यादि ।

(ङ) प्रार्थना पत्रों में— श्रीमान् , महा मान्यवर, मान्यवर महोदय, आदरणीय महोदय इत्यादि ।

३. सम्बोधन के ठीक सामने थोड़ा हटकर या कुछ नीचे थोड़ा हटकर प्रणाम, नमस्ते, प्रसन्न रहो इत्यादि शब्द सम्बोधन के अनुसार लिखे जाते हैं। प्रार्थना पत्रों में इनकी आवश्यकता नहीं होती। इनका ब्योरा निम्न प्रकार है—

(क) बड़ों को— प्रणाम, सादर नमस्ते, दण्डवत आदि।
(ख) छोटों को— प्रसन्न रहो, आशीर्वाद, चिरायु हो आदि।
(ग) बराबरवालों को— नमस्ते, राम राम, वंदे आदि।

ये सब अभिवादन के शब्द हैं और अधिकांश व्यक्तिगत पत्रों में ही काम में आते हैं। आवेदन पत्रों में इनका प्रयोग नहीं होता।

४. पत्र में जो कुछ हमें लिखना है उसे हम 'समाचार' के अन्तर्गत लेते हैं। इस अंग में निरर्थक शब्दों की भरमार नहीं करनी चाहिए। जिस उद्देश्य को लेकर पत्र लिखा जाय उसीसे सम्बंधित बातें इस अंग में होनी चाहिये। जिसको पत्र लिख रहे हों उसका यदि पत्र मिला है और उत्तर में वह पत्र लिखा जा रहा है तो आपका दिनांक .... का कृपा पत्र प्राप्त हुआ, धन्यवाद, उत्तर में निवेदन है कि............... । इस प्रकार लिखना चाहिये और यदि पत्र नहीं प्राप्त हुआ है तो,कई दिन से आपका पत्र नहीं मिला, दुःख है' । ऐसा लिखना उचित होगा। इसके बाद जो भी समाचार लिखने हों लिखकर अंत में शेष कुशल है, आशा है आप सानंद होंगे' मेरे योग्य सेवा लिखें, कृपा बनाई रक्खें' इत्यादि लिखना चाहिये। यह ध्यान रहे कि

प्रत्येक को एकसी बात नहीं लिखी जाया करती है। आवेदन पत्र या प्रार्थना पत्र में ऐसी बातें नहीं लिखी जाती हैं और बड़ों की ओर से छोटों को पत्र लिखते समय भी इनको बदल कर लिखना पड़ता है। जैसे 'प्रसन्न रहना और पत्रोत्तर शीघ्र देना' कुछ आवश्यकता हो तो लिखदेना' इत्यादि।

विषय की समाप्ति पर भवदीय, विनीत, स्नेहाभिलाषी, दर्शनाभिलाषी, आपका विश्वासपात्र, आपका तुम्हारा आदि शब्द लिखे जाते हैं। इनका ब्यौरा निम्न प्रकार है—

(क) बड़ों को—आपकी आज्ञाकारी' चरण सेवक, स्नेह-भाजन इत्यादि

(ख) बराबर वालों को—तुम्हारा मित्र, तुम्हारा ही, तुम्हारा प्रेमी इत्यादि

(ग) छोटों को—तुम्हारा शुभ चिंतक, तुम्हारा हितैषी, तुम्हारा, इत्यादि

(घ) साधारण परिचय वालों को—आपका विश्वास पात्र, कृपाभिलाषी, आपका, इत्यादि

(ङ) प्रार्थना पत्रों में—भवदीय, विश्वास पात्र, विनीत, आपका कृपापात्र इत्यादि

जिन अंगों का ऊपर वर्णन किया गया है उनका इस प्रकार समझें—

....

गोविंद राजियों का रास्ता
जयपुर
१—६—५१

प्रिय राम शरण—चिरायु हो

तुम्हारा पत्र मिला, समाचार मालूम हुए। ....

....

....

शेष कुशल है तुम सानंद होगे।

तुम्हारा
मदन गोपाल खूँटेटा

लिफ़ाफे पर या पोस्ट कार्ड पर जिसके नाम पत्र भेजना होता है उसका पता लिखा जाता है। पते पर पहले नाम, इसके बाद मोहल्ला और इसके बाद स्थान तथा पोस्ट आफिस लिखना चाहिये। यदि पोस्ट आफिस छोटा हो और प्रसिद्ध न हो तो कोष्ठों के भीतर जिला लिखना चाहिये।

आजकल पोस्ट कार्ड की कीमत तीन पैसे हैं और लिफ़ाफे का मूल्य दो आना है। टिकिट न लगाने पर उस पोस्ट कार्ड या लिफ़ाफे का दुगना मूल्य उस व्यक्ति से पोस्ट आफिस वसूल करता है जिसके नाम पत्र लिखा गया है। यदि वह इन्कार करदे तो पत्र भेजने वाले के पास वापस आता है और उससे फिर दुगनी कीमत वसूल की जाती है। यदि प्रेषक (भेजने वाले) ने अपना पता नहीं लिखा है तो वह पत्र पोस्ट आफिस द्वारा D.L.O को भेजा जाता है। D.L.O अर्थात डैड लैटर आफिस एक ऐसा कार्यालय है जहाँ उस पत्र को पढ़कर प्रेषक का पता मालूम किया जाता है। पता न चलने पर उस पत्र को नष्ट कर दिया जाता है।

पता लिखने का एक नमूना नीचे दिया जाता है—

पोस्ट कार्ड

टिकिट

इस तरफ सिर्फ पता लिखें

To,

शीतला प्रसाद मामोड़िया
मामोड़ियों का मोहल्ला
पो० चाकसू
(जयपुर)

अगले पृष्ठों में पृथक पृथक शीर्षकों के नीचे सब प्रकार के पत्रों का पूरा ब्योरा मय नमूनों के दिया जाता है। 'व्यक्तिगत पत्र', 'निमंत्रण पत्र', 'व्यावसायिक पत्र' 'आवेदन पत्र', 'शिकायती पत्र', और 'विविध पत्र' शीर्षकों के अन्तर्गत सभी प्रकार के पत्र आगये हैं।

२—व्यक्तिगत पत्र

इन पत्रों के अन्तर्गत वे पत्र आते हैं जो बड़ों की ओर से छोटों को या छोटों की ओर से बड़ोंको व्यक्तिगत रूप से लिखे जावें। बराबर वालों को लिखे जाने वाले व्यक्तिगत पत्र भी इसी श्रेणी के अन्तर्गत हैं। इन पत्रों में सम्बोधन के शब्दों का प्रयोग बहुत ही सावधानी से किया जाना चाहिये। जिसको पत्र लिखा जाय उससे लिखने वाले का क्या सम्बन्ध है—यह बात बड़े काम की है। जिन शब्दों का प्रयोग पत्र में किया जारहा हो वे उस व्यक्ति के लिए जिसको पत्र लिखा जारहा है उपयुक्त होने चाहिये। ऐसे पत्रों के कुछ नमूने नीचे दिये जाते हैं:—

१—माता की ओर से पुत्र को:—

शिव डूँगरी गाँव
(राजस्थान)
२५—६—५१

प्रिय राम, चिरायु हो

जब से तुम गये हो, सारा घर सूना दिखाई देता है। तुम पीली हवेली से सीधे अपने मामाजी के साथ चले गये और मुझ से मिलकर भी नहीं गये। तुम्हरे इस प्रकार चले जाने से मेरी आत्मा को बड़ा धक्का लगा है। तुम्हारे पिताजी इस दुख से बीमार से रहते हैं और चौबीस घंटे में केवल एक बार नाम मात्र के लिए कुछ खाते हैं। जिससे उनके शरीर का वजन काफ़ी घट गया है और घटता जारहा है उनकी यह दृढ़ प्रतिज्ञा है कि जबतक तुम न आवोगे वह ऐसा ही करेंगे चाहे कितना ही समय हो जाय

और कुछ भी हो। तुम्हारा भाई कैलाश भी सिसक सिसककर रोता है और मधू का तो हाल ह दयनीय है।

तुम यह हम लोगों के प्रति बड़ी ज्यादती कर रहे हो कि कुशल पत्र तक भी नहीं देते। तुम्हें प्रति सप्ताह पत्र लिखना चाहिये और महीने में दो बार हम जहाँ भी कहीं हो, वहीं आकर हमसे मिल जाना चाहिये। विशेष क्या लिखूँ, तुम स्वयं बुद्धिमान हो इतना असाधारण मोह पैदा करके फिर इस प्रकार निर्मोही होजाना सर्वथा अनुचित है। तुम कितने भी निर्मोही होजाओ, हम लोग तो जीवन भर वैसे ही रहेंगे जैसे उन दिनों थे।

तुम्हारी दुखिया माँ
शैलकुमारी

२—पुत्र की ओर से माता को :—

कल्पितपुर
(राजस्थान)
१—७—५१

पूज्या माताजी — सादर प्रणाम

आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ, धन्यवाद। परिस्थिति ऐसी ही थी मुझे आपसे उस समय न मिलकर आने का भारी दुःख है और जीवन भर रहेगा। आप पिताजी को सांत्वना दें। मैं शीघ्र ही सेवा में उपस्थित होजाऊँगा, उन्हें पूर्ण विश्वास दिलादें। ईश्वर सब कुछ अच्छा करेगा, आप चिंता न करें।

मैं यह तो भूठ ही कैसे लिखूँ कि आपसे पृथक रहकर भी मैं कुशल पूर्वक हूँ—सभी कुछ है परंतु हृदय प्रफुल्लित नहीं रहता। पिताजी चौबीस घंटे में एक बार केवल नाम मात्र के लिए कुछ

खाते हैं, उनका वजन घटता जारहा है और उनको यह प्रतिज्ञा मेरे न आने तक के लिए है—यह जानकर मैं अत्यंत व्याकुल हो गया हूँ। एक से कपड़े पहन कर स्कूल जाना, एक साथ नाश्ता करना, बाजा बजाना और बैड मिंटन खेलना इत्यादि अनेक ऐसी बाते हैं जिन्हें मैं कभी भी भूल नहीं सकता। उनसे पढ़ने में मुझे जो ज्ञान और आनंद प्राप्त होता था, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

मेरी साइकिल की पों पों किसी को खराब मत करने देना। मैं और कैलाश भैया उस पर बैठकर सैर करेंगे। ज्यों ज्यों अन्य साइकिलों की पों पों आवाज पिताजी के कानों तक पहुँचती होगी, वह मेरे लिए विह्वल हो उठते होंगे — यह बात मैं खूब महसूस कर रहा हूँ। अब स्कूल खुल जाने पर उनको मेरे बिना वहाँ जाना बहुत ही अखरेगा और वह और भी अधिक बेचैन होंगे। निरंतर उनकी सेवा में उपस्थित रहने से हम दोनों एक दूसरे से इतने घुल मिल गये हैं कि हमें अपने एकही शरीर और एकही आत्मा होने का आभास होता है। मैं कभी कभी पन्द्रह बीस मिनिट अधिक बाहर रह जाता था तो पिताजी रो पड़ते थे। आप पिताजी को मेरी ओर से पूरा विश्वास दिलादें कि मैं उनका वही पुत्र हूँ और रहूँगा—क्षणिक बिछोह की परवाह न करें, वह समय शीघ्र आवेगा जब मैं उन्हीं के साथ रहूँगा। विशेष क्या लिखूँ, आप उन का पूरा ध्यान रक्खें। कैलाश और मधू' को बहलावें। मैं शीघ्र ही आकर मधू को गोद में लूँगा।

आपका स्नेह भाजन

राम

३—गुरु की ओर से शिष्य को :—

साहित्य कुटीर
जलंधर नाथ पुरी
(राजस्थान)
२१–५–५१

शिष्यपुत्र राम, चिरायु हो

प्रति शुक्रवार को होने वाली साहित्य सभा के लिए लिखे गये तुम्हारे लेख, जिनको पुस्तक रूप में प्रकाशित करवाने की तुम्हारी हार्दिक इच्छा थी, संशोधित कर दिए गए हैं। यह लिखने की आवश्यकता नहीं कि तुम्हारे लेख हमारी शिक्षण संस्था द्वारा आयोजित वादविवाद सभाओं में सर्वोत्कृष्ट रहे और इनके प्रकाशन से विद्यार्थी जगत का बड़ा लाभ होगा। तुम्हारी इच्छानुसार मैंने इसका सम्पादन कर दिया है। इस पुस्तक का नाम 'कुछ तार्किक निबंध' रखना मैंने उचित समझा है। इसकी प्रेस कापी तैयार होगई है और प्रेस को भेजी जारही है। चूं कि यह सब तुम्हारा ही परिश्रम है अतः प्रकाशक से जो रकम पुरस्कार स्वरूप प्राप्त होगी वह पोस्ट आफिस सेविंग्सबैंक में तुम्हारे हिसाब में जमा कराटी जावेगी। लगभग १८) रुपये तुम्हारे पहले से उस हिसाब में जमा हैं।

तुमने जो छोटी छोटी कविताएँ समय समय पर बनाई थीं और जिन को मैंने बहुत पसंद किया था, मेरे पास सुरक्षित हैं। मैं अपनी कविताओं का एक संग्रह प्रकाशन के लिए दे रहा हूं तुम्हारी कविताएँ भी उसी में तुम्हारे नाम से ही सम्मिलित कर दी गई हैं। तुम्हारी 'मेरी साइकिल' रचना विशेष विनोदपूर्ण तथा आकर्षक है। कविता और लेख लिखने के इस चस्के को छोड़ना मत। तुममें कुछ प्रतिभा है, कुछ योग्यता है जिसे मैंने पहचाना है। यह ईश्वर दत्त शक्ति बेकार ही नष्ट न हो जाय।

हाँ, एक आवश्यक बात और है जिसके सम्बन्ध में यहाँ चर्चा चलाना जरूरी है। मुझे श्री नानगरामजी के द्वारा, जिन पर मैं पूरा भरोसा करता हूँ, मालूम हुआ है कि तुम्हारे विवाह के संबंध में कुछ झगड़ा चल रहा है और इसने काफी तूल पकड़ लिया है। तुम अपने मामाजी, बहिन तथा बहनोईजी की अप्रसन्नता के पात्र बन रहे हो। घर में क्लेश है। कारण यह मालूम हुआ है कि ये लोग कहीं तुम्हारा विवाह संबंध निश्चित कर आए हैं और तुम आनाकानी कर रहे हो। मैं तुम्हारे और तुम्हारे बुजुर्गों के हृदयों को खूब समझता हूँ, केवल दृष्टि कोण की भिन्नता है। तुम लड़की की अच्छाइयों को प्रधानता दे रहे हो और ये लोग केवल धन तथा बड़ी हैसियत को। चूँकि वे लोग सब बातचीत पक्की कर चुके हैं और 'भड़ल्या नवमी' का दिन इस बात की धार्मिक घोषणा करने के लिए भी निश्चित किया जा चुका है तथा रस्म के अनुसार रुपया और नारियल भी ग्रहण किया जा चुका है अतः अब यदि तुम राजी नहीं होते हो तो अपने घर की बड़ी बदनामी होगी और तुम्हारे ये निकटस्थ सम्बन्धी तुमसे सदा के लिए अप्रसन्न हो जावेंगे। लड़की यदि सुशील है और शिक्षित नहीं भी है तो शिक्षित की जा सकेगी। शिक्षित को ग्रहण करना उतना अच्छा नहीं जितना अशिक्षित को ग्रहण करके उसे शिक्षित बनाना। सुन्दरता हृदय की होनी चाहिए न कि ऊपरी। तुम स्वयं काफी समझदार हो अतः परिस्थिति पर विचार करके सहमत हो जाओ— 'होई है वही जो राम रचि राखा', ईश्वर सब अच्छा करेगा। भगवान के आशीर्वाद से तुम्हारा दाम्पत्य जीवन पूर्ण सुखी रहेगा और तुम्हें पछताने का अवसर नहीं मिलेगा। तुम यह विश्वास दिलाया करते थे कि जब तक जीऊंगा आप की आज्ञा कभी नहीं टालूँगा। इस गृहक्लेश को

मिटाने और तुम्हारे जीवन को सुखी बनाने की दृष्टि से मैं आज्ञा देता हूं कि तुम उस लड़की से विवाह सम्बन्ध करना स्वीकार कर लो। शेष कुशल है, आशा है तुम आनन्द में होगे। तुम जहाँ कहीं रहो, भगवान तुम्हें प्रसन्न रक्खे और जो काम करो उसमें सफलता दे— ऐसी मेरी कामना है।

तुम्हारा
विवेकानन्द शर्मा

४ शिष्य की ओर से गुरु को:——कल्पित पुरी
२४—५—५१

पूज्य गुरुदेव, साष्टांग प्रणाम

कृपा पत्र प्राप्त हुआ, धन्यवाद ! आपकी आज्ञानुसार मैंने अपनी अनुमति देदी है, आप अधीर न हों। जब आप राजी हैं तो सब कुछ अच्छा होगा। धृष्टता की क्षमा माँगते हुए इतना अवश्य प्रगट करदेना चाहता हूँ कि मेरे सम्बंधियों को यह भ्रम था कि आप ही ने मुझे अस्वीकार करने की सलाह दी है और संभवतः आपने उस भ्रम के निवारणार्थ ही मुझे अपनी अनुमति प्रदान करने के लिए मजबूर किया है। कुछ भी हो, आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। माता को कृपया मेरा नमस्कार मालूम करें। आपके दर्शन करे कई दिन होगये हैं, शीघ्र ही सेवा में उपस्थित होऊँगा। जब से मैंने अनुमति दी है, सभी लोग प्रसन्न दिखाई पड़ते हैं।

चरण सेवक
राम

५. मित्र को पत्र :—

गोली राम गाँव
२१—२—५१

प्रिय जगदीश,   नमस्ते

तुम्हारा पत्र मिला, धन्यवाद। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि यज्ञ की पूर्णाहुति २८ तारीख को है। तुमसे मिले भी कई दिन होगये हैं अतः एक पंथ दो काज वाली कहावत सिद्ध होगी। मैं गुरुजी के साथ अवश्य उदयपुरी आऊँगा और संतों के दर्शनों के साथ ही साथ दो तीन दिन रहकर तुम्हारे साथ समय बिताने का आनंद भी प्राप्त करूँगा। तुमने लिखा है कि तुम जयपुर से चाचाजी का रेडियो ले आये हो, घर में बिजली है ही—बड़ा आनंद रहेगा। उदयपुरी के मालपुए प्रसिद्ध हैं बनवा-कर तैयार रखना, हम लोग २७ तारीख की सांयकाल को अवश्य पहुँच रहे हैं। शेष कुशल है, आशा है तुम सानंद होंगे।

तुम्हारा
शीतला प्रसाद

३—निमंत्रण—पत्र

विवाह, प्रीति भोज, साहित्यिक गोष्ठी, उत्सव, संगीत गोष्ठी आदि के अवसर पर जब हम किसी को सम्मिलित करना चाहते हैं तब उसे निमंत्रण पत्र भेजते हैं। इस पत्र के शब्दों में आकर्षण होना चाहिये। नम्रता पूर्वक किसी से किसी विशेष काम में सम्मिलित होने के लिये प्रार्थना करने का नाम निमंत्रण देना है। विवाह, यज्ञोपवीत आदि के निमंत्रण पत्रों में पद्य लिखने की पुरानी परिपाटी भी अभी प्रचलित है परंतु आधुनिक युग में अब इसे कम पसंद किया जाता है। निमंत्रण पत्रों के कुछ नमूने नीचे दिये जाते हैं—

१. विवाहोत्सव के लिए निमंत्रण-पत्र :—

निमंत्रण-पत्र

श्रीमान ____________________

आपको यह जानकर अत्यंत हर्ष होगा कि चि० दशरथ कुमार शरण का विवाह संस्कार जटवाड़े के माननीय सेठ श्री धन्नालालजी की सुपुत्री लक्ष्मी बाई के साथ माघ सुदी ५ (वसंत पंचमी) तदनुसार तारीख ३१ जनवरी सन् १९५२ को होना निश्चित हुआ है। बारात उसी दिन प्रातःकाल की गाड़ी से जयपुर होती हुई जटवाड़ा पहुँचेगी। आपसे सानुरोध निवेदन है कि इस अवसर पर पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

शिव डूँगरी गाँव
दिनांक १०-१-५२-

दर्शनाभिलाषी
लक्ष्मी नारायण

नोट—इस कार्ड को सुन्दर लिफाफे में भी रखकर भेजते हैं। इसी के दूसरी ओर पता लिखकर इस पर भी टिकिट लगा देते हैं। दोनों ही तरीके प्रचलित हैं।

२—विवाहोत्सव के लिए निमंत्रण पत्र :—

निमंत्रण पत्र :—

श्रीमान ....

परमात्मा की असीम कृपा से मेरी पुत्री सौभाग्यवती लक्ष्मी बाई का शुभ पाणिग्रहण संस्कार शिव डूँगरी गाँव निवासी श्री दशरथ कुमार शरण के साथ मिति माघ सुदी ५ गुरुवार (वसंत पंचमी)

तदनुसार तारीख ३१ जनवरी सन् १६५२ को होना निश्चित हुआ है अतः आपसे सानुरोध निवेदन है कि दो दिन पहले पधार कर विवाहोत्सव की शोभा बढ़ावें। प्रोग्राम पृष्ठ पर अंकित है।

जटवाड़ा (जयपुर) दर्शनाभिलाषी
दिनांक १०-१-५२ पन्नालाल

दूसरी ओर

प्रोग्राम

१. गुरुवार दिनांक ३१ जनवरी ५२ दोपहर के १ बजे रेल्वे स्टेशन जटवाड़ा पर बरात का स्वागत।
२. " सायंकाल ७ बजे - पाणिग्रहण संस्कार।
३. " रात्रि के ६ बजे बरात को भोजन।
४. शुक्रवार दिनांक १ फर्वरी ५२ सायंकाल ७ बजे प्रीति भोजन (बढ़ार)
५. " " रात्रि के १० बजे—बिदाई

नोट :—जटवाड़ा रेल्वे स्टेशन जयपुर से दौसा जानेवाली लाइन पर है। जयपुर से मोटर बस भी जाती है।

३—स्कूल के वार्षिकोत्सव के लिए निमंत्रण-पत्र :—

श्रीमान ....

....

महोदय,

२६ जनवरी को पूर्ण स्वराज्य दिवस के साथ चाकसू स्कूल के

छात्रों तथा अध्यापकों ने वार्षिकोत्सव मनाना भी निश्चित किया है। १५ अगस्त के स्वतंत्रता दिवस तथा १० सितम्बर के उद्योग पर्व के सम्बंध में छात्रों ने दो नाटक खेले थे जिनमें घोषित किये गए पदक भी उन्हें इसी अवसर पर प्रदान किए जायेंगे और प्रति वर्ष दी जाने वाली इनामें भी इसी समय दी जायेंगी। छात्र गण बड़ी दिलचस्पी से कुछ दिनों से इस विशेष आयोजन की तैयारी में संलग्न हैं। पूरा प्रोग्राम पृष्ठ पर अंकित है। आपसे सानुरोध निवेदन है कि इस अवसर पर पधारकर छात्रों तथा अध्यापकों का उत्साह बढ़ायें।

रा० ऐं० हि० मिडिल स्कूल चाकसू २०-१-५१	विनीत गोपालदास 'सुमन' उत्सव मंत्री

कृ० पृ० उ०

प्रोग्राम

१. प्रातः ७॥ बजे झंडाभिवादन तथा झंडा गायन राम-गोपाल माहेश्वरी तथा अन्य छात्र

२. „ ७॥ से ८॥ स्पोर्टस्—छुट्टनलाल अब्दुल कय्यूम तथा अन्य छात्र

३. „ ८॥ से ८-४० 'आई आजादी की सालगिरह' (गायन) शीतलाप्रसाद मामोड़िया

४. „ ८-४० से ९ हिंदी प्रहसन (श्री सुमन द्वारा रचित) माणकचन्द तथा अन्य छात्र

५. „ ९ से ९-१० 'स्वतन्त्र भारत' (गायन) शीतलाप्रसाद मामोड़िया

६. „ ९-१० से ९।। जादू के खेल—राधेश्याम गुप्ता
७. „ ९।। से ९-४० 'सारे जहाँ से अच्छा' (उर्दू गज़ल) रमज़ान बख्श
८. „ ९ ४० से ९-५० विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट- प्रधान अध्यापक
९. „ ९-५० से १० एक निवेदन — श्री राधेगोपाल सक्सेना
१०. „ १० से १०।। पारितोषिक वितरण तथा पदक वितरण सभापति (श्री बिहारीलाल सक्सेना स्थानीय मेडिकल ऑफीसर)
११. „ १०।। से ११ सभापति का भाषण तथा प्र० अ० द्वारा धन्यवाद

नोट—बाहर से पधारनेवाले सज्जनों के ठहरने के लिए तथा महिलाओं के उत्सव देखने के अर्थ विशेष व्यवस्था की गई है।

---

४. सभा में सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रण पत्र :—

विद्यार्थी परिषद कार्यालय
चाकसू
२८-८-५०

महोदय,

शिक्षा विभाग राजस्थान के आदेशानुसार हमारे स्कूल के विद्यार्थियों ने १०-९-५० से २०-९-५० तक उद्योग-पर्व मनाने का आयोजन किया है जिसके सम्बंध में आज स्कूल भवन में सायंकाल के ५ बजे एक सभा होगी। आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि कृपया पधारकर इस शुभ कार्य में हाथ बटायें। आप जैसे

योग्य महानुभावों के संरक्षण तथा पथ-प्रदर्शन से ही हमारा यह आयोजन सफल हो सकेगा।

विनीत
शीतलाप्रसाद म. मोडिया
मंत्री

श्रीमान्··· ··· ··· ···· ··· ···· ··· ··· ···
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···
··· ··· ··· ··· ··· ···

चाय पार्टी के लिए निमंत्रण :—

तहसील चाकसू
२५-४-५१

मेरे सहयोगी श्री विनोद प्रसाद जी नायब तहसीलदार का स्थान परिवर्तन होजाने के कारण आज तहसील स्टाफ द्वारा एक चाय पार्टी का आयोजन किया गया है अतः निम्न लिखित सज्जनों से निवेदन है कि वे आठ बजे मेरे कार्टर पर पधार कर उसमें सम्मिलित होने का कष्ट करें—

विनीत
मुरली मनोहर माथुर
तहसीलदार

१ श्री डाक्टर साहब मय स्टाफ
२ श्री हैड मास्टर साहिब ,,
३ श्री चेयर मैन पंचायत बोर्ड

४—व्यावसायिक-पत्र

व्यावसायिक पत्र हमारे व्यावहारिक जीवन से घनिष्ट सम्बंध रखते हैं। व्यक्तिगत पत्रों का क्षेत्र छोटा हो सकता है परंतु व्यावसायिक पत्रों का क्षेत्र बहुत बड़ा है। यह समझना भूल है कि ऐसे पत्र केवल व्यापारियों के ही काम के हैं। सर्वसाधारण को अपने जीवन में न जाने किन किन से पत्र व्यवहार करना पड़ता है। मनुष्य जीवन ही एक सुन्दर तथा पूरा व्यवसाय है जिसे भली प्रकार व्यतीत करने के लिए हमें खूब लिखना बोलना और भाव प्रकट करना सीखना है। जब हम किसी कम्पनी या दुकानदार को सामान मँगवाने के लिए आर्डर भेजते हैं या वह दूकानदार हमें कुछ लिखता है तब व्यावसायिक पत्रों का आदान प्रदान होता है। किसी भी कर्म या कम्पनी के मैनेजर से जो पत्र व्यवहार होगा अथवा वह जो पत्र हमें लिखेगा, व्यावसायिक ढंग का होगा। ऐसे पत्रों में सम्बोधन 'प्रिय महाशय प्रिय महोदय, महोदय,' आदि शब्दों द्वारा किया जाता है और नीचे 'आपका' शब्द लिखते हैं। कुछ नमूने नीचे दिये जाते हैं —

१. बुकसेलर को पुस्तकें मँगवाने के लिए पत्र :—

गव० ए० हि० मिडिल स्कूल
नूआ (शेखावाटी)
२०-९-५०

महोदय,

कृपया निम्न लिखित पुस्तकें वी० पी० पोस्ट द्वारा शीघ्र रवाना करने का कष्ट करें। सदा की भाँति 6¼% कमीशन अवश्य

काटिये और नए साल का कैलेण्डर भी भेजिये ।

१. अंकगणित, यादव चंद्र चक्रवर्ती
२. प्रबंध प्रवेशिका, एन० एल० माथुर
३. नवीन रेखा गणित, इंडिया एण्ड माथुर

आपका
भागीरथ सिंह आर्य
कक्षा—आठ

TO, मैसर्स गर्ग बुक कम्पनी
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर

२—बुकसेलर की ओर से ग्राहक को पत्र :—

गर्ग बुक कम्पनी
जयपुर
२०-१-५१

प्रिय महाशय,

आपका दिनांक २०-१-५१ का आर्डर प्राप्त हुआ, धन्यवाद । आपके लेखानुसार पुस्तकें वी० पी० पोस्ट द्वारा आज रवाना करदी गई हैं । आशा है पार्सल शीघ्र छुड़ा लिया जावेगा । नए साल के कैलेण्डर छप रहे हैं । छपते ही शीघ्र भेज देंगे । योग्य सेवा से सूचित करते रहें । बिल संलग्न है ।

आपका
मैनेजर

TO, श्री भागीरथ सिंह आर्य
आठवी श्रेणी, स्कूल नूआं
पो० नूआं (नवलगढ़)

३-- घड़ी मँगवाने के लिए आर्डर :--

बड़ा बाजार
झुंझुनू (शेखावाटी)
१-६-४८

महाशय,

कृपया एक 'कीन ऐवी' पाकेट घड़ी जिसका मूल्य आपके सूची पत्र में ४०) छपा है वी० पी० पोस्ट द्वारा शीघ्र भेजदें।

आपका
मोहन लाल गाड़िया

TO,
वेस्ट एण्ड वाच कम्पनी
बम्बई

दवा मँगवाने के लिए पत्र :--

छावनी नीम का थाना
३-१०-४७

प्रिये महाशय,

आपके यहाँ से गत वर्ष दो सेर ब्राह्मी बूटी मँगवाई थी, बड़ी गुण दायक सिद्ध हुई।

मैंने कई विद्यार्थियों को यह बूटी सेवन करवाई तथा स्वयं भी कुछ दिन इसका प्रयोग किया था। कृपया दो सेर ताजी

बूटी इस वर्ष के लिए भी वी० पी० पोस्ट द्वारा भेज दीजिये।

आपका
बद्री नारायण शर्मा अध्यापक

TO,
श्री प्रबंधक, धन्वन्तरि औषधालय
पो. विजयगढ़ (अलीगढ़)

५. वस्त्र मँगवाने के लिए आर्डर—

पुरानी बस्ती
जयपुर
११-१०-५०

महोदय,

दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित की हुई आपकी विज्ञप्ति को देखकर मैंने विचार किया है कि अपने स्वयं के तथा कुछ इष्ट मित्रों के लिए एक गाँठ अमेरिकन ऊनी कोटस् की मँगवाऊँ। आज मनिआर्डर द्वारा २००) पेशगी स्वरूप आपके कार्यालय को भेज दिये गये हैं। कृपया शेष रकम वी० पी० द्वारा वसूल करलें। पार्सल रेलवे द्वारा भेजें। यदि माल अच्छा सिद्ध हुआ तो अधिक गाँठें मँगवाने के लिए आर्डर भेजा जायगा।

आपका
तुलसी राम शर्मा

TO,
मेसर्स रमेश राज एण्ड कम्पनी (करोंबीवाले)
अमेरिकन कोटों के व्यापारी
नई दिल्ली

५---आवेदन-पत्र

नौकरी के लिए, छुट्टी चाहने के लिए अथवा अन्य किसी कार्य के लिए जो प्रार्थना पत्र लिखे जाते हैं वे सब आवेदन-पत्र कहलाते हैं। उनके कुछ नमूने नीचे दिए जाते हैं :—

१—स्कूल में प्रवेश पाने के लिए :—

सेवा में,

श्री प्रधानाध्यापक
गव० हाई स्कूल
निवाई

महोदय,

मैंने इस वर्ष गँ० हि० मिडिल स्कूल चाकसू से आठवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में पास की है। तीनों टरमीनल्स् में समस्त कक्षा में मेरी पोजीशन सर्वोत्तम रही है। वालीबाल के खेल, स्कूल की ओर से खेले गये ड्रामों तथा ऐसे ही अन्य कार्यों में मेरी जो अत्यधिक दिलचस्पी रही है और जिसके फल स्वरूप मुझे जो पदक मिले हैं, उनकी सूची भी परीक्षा में प्राप्तांकों की सूची के साथ संलग्न हैं, मैं स्कूल के विद्यार्थी परिषद का मंत्री था और साहित्य परिषद का उपमंत्री। हमारे स्कूल में खेल की दो टीम थीं जिनमें से एक का मैं पूरे सेशन केप्टेन रहा। विशेष वृत्तांत प्रधानाध्यापकजी के प्रणाम पत्र से ज्ञात होगा जिसकी सही प्रतिलिपि भी संलग्न है।

कृपया मुझे अपने स्कूल की नवीं श्रेणी में दाखिल करने का